04 - ईश्वर की देहरी

05 - परिस्थितियों से जूझते सुब्रमण्यम के भावयुक्त चित्र

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 27 अप्रैल, 2025

06 - 41 डिग्री के आसपास पहुंचा तापमान, प्याऊ के...

07 - परदे पर सच को छलने की तकनीक है 'एआई'

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 197, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

आसमानी उड़ान

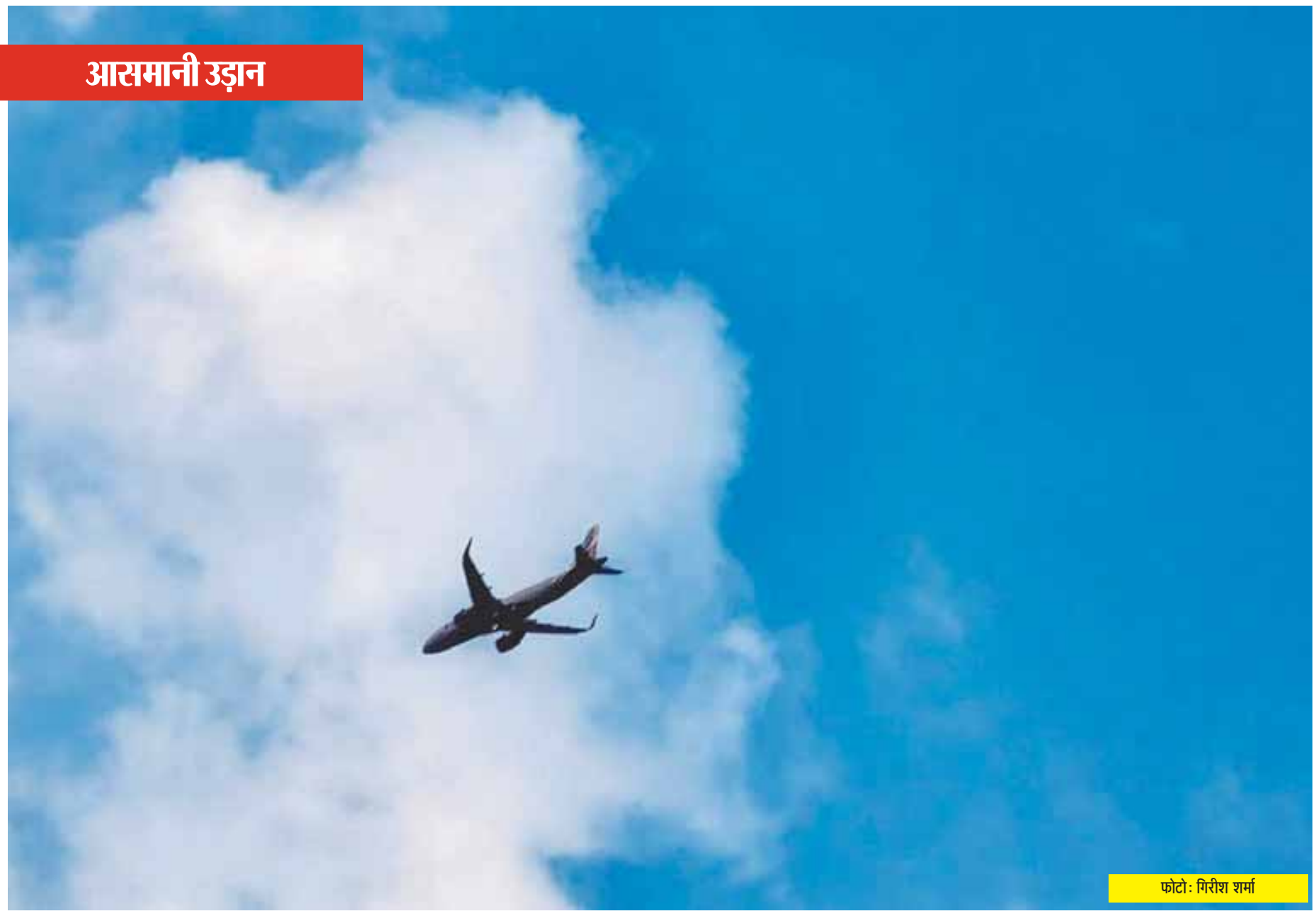

फोटो: गिरीश शर्मा

बम से उड़ाए जा रहे आतंकियों के घर

● शोपियां,कुलगाम और पुलवामा में सेना का ऐक्शन जारी ● अब तक 7 आतंकवादियों के घर ब्लास्ट से उड़ाए

● टीआरएफ बोला-पहलगाम हमले में हमारा हाथ नहीं ● पाकिस्तानी पीएम बोले-हर निष्पक्ष जांच को हैं तैयार

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में अब तक 7 आतंकवादियों के घर गिराए जा चुके हैं। सेना ने त्राल, अनंतनाग, पुलवामा, कुलगाम और शोपियां में सर्च ऑपरेशन के दौरान यह एक्शन लिया। द कश्मीर रेजीस्टेंस फ्रंट ने पहलगाम हमले के 3 दिन बाद अटैक की जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया है। हमले के बाद सबसे पहले टीआरएफ ने ही इसकी जिम्मेदारी ली थी। गुजरात में शनिवार सुबह 500 से ज्यादा घुसपैठियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने सूरत और अहमदाबाद में घुसपैठियों पर कार्रवाई की। गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को मुख्यमंत्रियों से अपील की थी कि घुसपैठियों की जल्द से जल्द पहचान करें और उन्हें वापस उनके देश भेजें। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा है कि वे पहलगाम अटैक की हर निष्पक्ष जांच में शामिल होने को तैयार हैं। शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान को बदनाम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान पर हर बार आरोप लगते हैं और यह बर्दाश्त नहीं है। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री जांच की बात कर रहे हैं और दूसरी ओर पाकिस्तान की फौज ने लगातार दूसरे दिन एलओसी पर गोली बारी की। भारतीय फौज ने जवाब दिया।

● **फॉरेन सरकारों से बोला भारत- पहलगाम हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ-** पहलगाम हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 वर्ल्ड लीडर्स को फोन कर आतंकी हमले की जानकारी दी। एक रिपोर्ट में दावा किया कि प्रधानमंत्री ने वर्ल्ड लीडर्स को यह बताया कि शुरुआती जांच में यह सामने आया है कि पहलगाम हमले के पीछे पाकिस्तान का ही हाथ है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस बात के भारत के पास तकनीकी इनपुट्स हैं और हमारे सोर्सेस ने भी यह कन्फर्म किया है। दिल्ली में 30 डिप्लोमैट्स की भी एक मीटिंग हुई, जिसमें भारत ने यही जानकारी दी।

सुरक्षाबलों के ऑपरेशन का लाइव टेलीकास्ट न करे मीडिया

पहलगाम हमले के बाद मोदी सरकार ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने शनिवार को मीडिया आउटलेट्स से सेना के ऑपरेशन्स और सुरक्षा बलों की आवाजाही का लाइव टेलीकास्ट न करने का निर्देश दिया है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने कहा कि ऐसी रिपोर्टिंग से अनजाने में दुश्मनों को मदद मिल सकती है। यह सलाह जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद रक्षा मामलों पर रिपोर्टिंग के मद्देनजर जारी की गई है, जिसमें 26 लोग मारे गए थे।

सुप्रभात

जब हम स्कूल में थे
हमें वो सवाल हल करने को कहा गया
जो पाठ के अंत में थे।

हमारी कक्षा में–
नये सवाल पूछना लगभग वर्जित था
और साथ ही वर्जित था
खुद से जवाब लिखना भी !

सवाल पहले से तय थे।
उनके जवाब भी पहले से तय थे।
उनके बदले में अंक भी पहले से तय थे।
और पहले से तय थे
परीक्षाओं के परिणाम भी।

इस तरह स्कूलों ने हमें
देश का वह नागरिक बना दिया
जो न तो सवाल करता है
और न ही जबाव देता है।

– अशोक कुमार

आज मुख्यमंत्री डॉ. यादव करेंगे 'एमपी टेक ग्रोथ' कॉन्क्लेव-2025' का शुभारंभ

भोपाल(नप्र)। मध्यप्रदेश को टेक्नोलॉजी और डिजिटल नवाचार का केन्द्र बनाने के उद्देश्य से आयोजित 'एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 2025' का शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 27 अप्रैल को इंदौर के 'ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर' में करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उम्मीद जताई है कि कॉन्क्लेव देश-दुनिया के टेक दिग्गजों के लिए निवेश का स्वर्णिम अवसर सिद्ध होगा। राज्य के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का ये कॉन्क्लेव आयोजन जीआईएस-भोपाल में आए निवेश प्रस्तावों को मूर्त रूप देने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

'एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव' प्रदेश का पहला पूर्णतः सेक्टर आधारित टेक-कॉन्क्लेव होगा, जो हाल ही में आयोजित जीआईएस-भोपाल में आये निवेश प्रस्तावों को धरातल पर साकार करने का मंच बनेगा। कार्यक्रम में गुगल, माइक्रोसॉफ्ट, एनवीआईडीए जैसी बिग-टेक कंपनियों सहित 300 से अधिक तकनीकी विशेषज्ञ, उद्योगपति, नीति निर्माता और निवेशक शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस अवसर पर प्रदेश की चार नई तकनीकी नीतियों जीसीसी नीति, ड्रोन नीति, सेमीकंडक्टर नीति एवं एवीजीसी-एक्सआर नीति की गाइडलाइन्स जारी करेंगे।यह नीतियां नवाचार, अनुसंधान और निर्माण को प्रोत्साहित कर प्रदेश में क्षेत्रीय स्तर तक तकनीकी उद्यमिता और क्षमताओं को नई ऊँचाइयाँ देंगी।

पीएम ने कहा-युवाओं के लिए अवसरों का अच्छा समय

15वां रोजगार मेला, 51000 युवाओं को बांटे जॉब लेटर

● वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए शामिल हुए प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 15वां रोजगार मेले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को सुबह 11 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए शामिल हुए। उन्होंने केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में 51,000 से ज्यादा युवाओं को जॉब लेटर बांटें। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा- यह युवाओं के लिए अभूतपूर्व अवसरों का समय है। सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठा रही है कि देश में रोजगार और स्वरोजगार के अवसर बढ़ते रहें। रोजगार मेले का आयोजन देश भर में 47 स्थानों पर किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का हवाला देते हुए मोदी ने कहा कि, भारत सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। उन्होंने कहा कि ऑटोमोबाइल और फुटवियर इंडस्ट्री में प्रोडक्शन और एक्सपोर्ट ने नए रिकॉर्ड बनाए हैं, जिससे बड़ी संख्या में रोजगार पैदा हुए हैं। प्रधान मंत्री ने बताया कि अंतर्देशीय जलमार्ग के माध्यम से संभाले जाने वाले कार्गो 2014 से पहले 18 मिलियन टन से बढ़कर 145 मिलियन टन हो गए हैं, जबकि राष्ट्रीय जलमार्ग पांच से बढ़कर 110 हो गए हैं और उनकी लंबाई 2,700 किमी से बढ़कर 5,000 किमी से अधिक हो गई है।

भोपाल में प्रधानमंत्री रोजगार मेले में पहुंचे केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज

भोपाल (नप्र)। भोपाल के समन्वय भवन में शनिवार को प्रधानमंत्री रोजगार मेला आयोजित हुआ। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सरकारी नौकरियों में चयनित अभ्यार्थियों को वर्चुअली संबोधित किया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे।

यह मेला आज देश के 47 स्थानों पर आयोजित हो रहा है। जिसमें प्रयागराज, लखनऊ, चेन्नई समेत कई स्थान शामिल है। इसके तहत सरकारी नौकरियों में चयनित 51 हजार से अधिक अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे जा रहे हैं। कार्यक्रम में राज्य मंत्री कृष्णा गौर, मंत्री करण सिंह वर्मा, महापौर मालती राय समेत कई नेता मौजूद रहे। भोपाल में हुए कार्यक्रम में 200 से ज्यादा अभ्यर्थियों ने भाग लिया।

51 हजार युवाओं को दिए नियुक्ति पत्र- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने वर्चुअल संबोधन में कहा कि देश के अलग-अलग विभागों में 51 हजार से ज्यादा युवाओं को पक्की नौकरियां मिली हैं। उन्होंने कहा कि ये सभी युवा देश की आंतरिक सुरक्षा, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और श्रमिकों के लाभ के लिए अहम भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने बताया कि स्टार्टअप इंडिया और स्टील इंडिया जैसी योजनाओं के जरिए सरकार युवाओं को रोजगार के नए अवसर दे रही है। आज भारत में सबसे ज्यादा रियल टाइम डिजिटल ट्रांजैक्शन हो रहे हैं और देश डेटा साइंस और इनोवेशन में आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि इस बार के बजट में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने की योजना है, ताकि युवा ग्लोबल स्तर के प्रोडक्ट बना सकें। उन्होंने कहा कि खादी और ग्राम उद्योग का टर्नओवर पहली बार 1 लाख 70 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा हुआ है, जिससे गांवों में रोजगार के नए रास्ते खुले हैं। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि जल्द ही मुंबई में युवाओं और क्रिएटिव लोगों के लिए एक बड़ा समिट होने जा रहा है, जहां उन्हें स्टार्टअप और एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) से जुड़े मौके मिलेंगे।

प्रधानमंत्री ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर भी खास जोर दिया। उन्होंने बताया कि अब देश में 90 लाख से ज्यादा सेल्फ हेल्प ग्रुप हैं और 10 करोड़ से ज्यादा महिलाएं इससे जुड़ी हैं।

पहलगाम हमले पर बोले मोहन भागवत

हम पड़ोसियों को तंग नहीं करते लेकिन दंड देना राजा का कर्तव्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि भारत की शास्त्रार्थ परंपरा सत्य को सहमति से स्थापित करती है। हिंदू मैनिफेस्टो इसी उद्देश्य से प्रस्तावित है, जो व्यापक चर्चा और सहमति के लिए प्रमाणित पुस्तक है। यह विश्व को नया रास्ता देने का भारत का कर्तव्य है, क्योंकि 2000 वर्षों के आस्तिक, नास्तिक और जड़वादी प्रयोग असफल रहे। भौतिक सुख बढ़ा, लेकिन असमानता और पर्यावरण हानि भी बढ़ी। एक कार्यक्रम में भागवत ने कहा कि भारत की प्राचीन दृष्टि पर आधारित जीवन व्यवस्था स्थापित होनी चाहिए। पुस्तक में आठ सूत्र पूर्ण हैं, लेकिन भाष्य काल और परिस्थिति के अनुसार बदलते हैं। पिछले 1500

वर्षों से नया शास्त्र नहीं आया, जिसके कारण जाति व्यवस्था जैसे दोष समाज में आए। वेदों का सही भाष्य आज आवश्यक है। शास्त्रों में अस्पृश्यता या जाति का कोई स्थान नहीं, जैसा उडुपी के संत समाज ने भी कहा।

आततायियों को सबक सिखाना भी हमारा धर्म – उन्होंने जोर दिया कि अहिंसा हमारा स्वभाव है, लेकिन आततायियों को सबक सिखाना भी धर्म है। पड़ोसियों को तंग नहीं करते, लेकिन उपद्रव करने वालों को दंड देना राजा का कर्तव्य है। भ्रष्टाचारियों को छोड़ना उचित नहीं, क्योंकि धर्म में अर्थ और काम को मर्यादा में रखना जरूरी है। धर्म को केवल कर्मकांड तक सीमित नहीं करना चाहिए, यह सत्य, करुणा और सुचिता है। हिंदू समाज को अपने धर्म को समझने की जरूरत है। हिंदू मैनिफेस्टो शास्त्रार्थ के माध्यम से शुद्ध परंपरा को सामने लाएगा।

सुबह सवेरे
इंदौर ■ रविवार, 27 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

दिल्ली वक्फ की संपत्ति महज 12 साल में 9 से 1047 हुई

दिल्ली वक्फ बोर्ड ने 2013 से 1,047 संपत्तियां हासिल कीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि 2013 में वक्फ एक्ट, 1995 में एक बदलाव किया गया था। इस बदलाव से पहले, बिना रजिस्ट्रेशन वाले वक्फ पर कोई दावा नहीं कर सकता था लेकिन बदलाव के बाद वक्फ बोर्ड की संपत्तियों में भारी बढ़ोतरी हुई है। पहले पूरे देश में वक्फ बोर्ड के पास 2,07,394 संपत्तियां थीं। इनका क्षेत्रफल 18.3 लाख एकड़ था। 2013 में संशोधन होने के बाद, ये संपत्तियां बढ़कर 8,72,870 हो गईं। अब इनका क्षेत्रफल 39 लाख एकड़ हो गया है। दिल्ली वक्फ बोर्ड का उदाहरण लेते हैं। 2013 में उनके पास सिर्फ नौ संपत्तियां थीं। इनका क्षेत्रफल 0.03 एकड़ था। लेकिन 2025 तक, उनके नियंत्रण में 1,047 संपत्तियां हो गईं। इनका क्षेत्रफल 28 एकड़ हो गया है।

आतंकी हमले के बाद झारखंड में एटीएस की छापेमारी

पति-पत्नी समेत 6 हिरासत में

धनबाद (एजेंसी)। एंटी टेररिस्ट स्क्वाड को मिली खुफिया सूचना के आधार पर धनबाद के वासेपुर समेत कई लोकेशन पर छापेमारी की गई। एटीएस के एसपी ऋषभ झा खुद इस छापेमारी को लीड कर रहे हैं। अब तक इस कार्रवाई में आधा दर्जन लोगों को हिरासत में

लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बताया जा रहा है कि इनका कनेक्शन पुलवामा हमले से जुड़े होने की संभावना है। इसकी खुफिया जानकारी मिलने के बाद झारखंड एटीएस की टीम ने बैंकमोड़ थाना क्षेत्र के वासेपुर और भूली थाना क्षेत्र के 9 स्थानों पर एक साथ छापेमारी की है। छापेमारी में कई आपत्तिजनक सामान के अलावा भड़काऊ धार्मिक पुस्तकें बरामद की गई हैं।

भारत के हमले की आशंका के बीच चीन की शरण में पाक

युद्ध के लिए मांगी मदद!

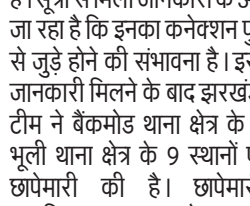

इस्लामाबाद (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान को भारत के हमले का डर सता रहा है। पिछले दो दिनों से भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले पाकिस्तान ने नई पैंतरेबाजी शुरू कर दी है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने जहां निष्पक्ष जांच ऑफर किया है, वहीं पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने इंटरनेशनल जांच की मांग कर डाली है। लेकिन भारत के तेवर को देखते हुए पाकिस्तान चीन की शरण में पहुंच गया है।

कांग्रेस का 'संविधान बचाओ अभियान' जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए

इंदौर में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने भाजपा पर निशाना साधा

इंदौर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्यप्रदेश विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कांग्रेस के 'संविधान बचाओ अभियान' के अंतर्गत आज इंदौर की होटल सरोवर पोर्टिको में मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि देश के नागरिकों के अधिकारों पर भाजपा सरकार हर दिन हमला कर रही है। जनता को सरकार द्वारा किए जा रहे इस अत्याचार से बचाने के लिए कांग्रेस 'संविधान बचाओ अभियान' शुरू करने जा रही है। इस अभियान का उद्देश्य संविधान में निहित सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय जैसे मूलभूत सिद्धांतों की रक्षा करना है, जिन पर वर्तमान सत्तारूढ़ सरकार द्वारा गंभीर प्रहार किया जा रहा है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि कांग्रेस की 'संविधान बचाओ यात्रा' केवल कांग्रेस पार्टी का आंदोलन नहीं है। यह देश के हर उस नागरिक का आंदोलन है, जो संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों का सम्मान करता है। उन्होंने कहा यह आंदोलन मात्र वोट बैंक की राजनीति नहीं, बल्कि आम जनता की वास्तविक आवाज़ है। इस अभियान के तहत कांग्रेस द्वारा निर्धारित तीन प्रमुख बिंदु हैं सामाजिक न्याय, राजनीतिक न्याय और आर्थिक न्याय। केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि आम जनता की वास्तविक ज़रूरतें हैं।

'संविधान बचाओ अभियान' की रूपरेखा

- 25 अप्रैल से 30 मई 2025 तक चार चरणों में संचालित होगा।
- 25-30 अप्रैल : सभी राज्यों में जिला स्तर पर जनसभाएं।
- 5-10 मई : सभी जिलों में ब्लॉक स्तर पर जनसभाएं।
- 11-17 मई : प्रदेश विधानसभाओं में आम जनता के साथ संवाद और सभाएं।
- 20-30 मई : घर-घर जाकर प्रचार और 'संविधान बचाओ' का संदेश प्रसारित करना।

अभियान की प्रमुख मांगें

- जातीय जनगणना कराई जाए। क्योंकि, सामाजिक न्याय की नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जातीय संरचना की स्पष्टता आवश्यक है।

- एससी, एसटी और ओबीसी वर्गों के लिए निजी शिक्षण संस्थानों में आरक्षण लागू किया जाए। समानता के अधिकार की रक्षा के लिए यह अनिवार्य है।
- आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाई जाए। वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार आरक्षण की पुनर्समीक्षा आवश्यक है।
- आर्थिक न्याय सुनिश्चित किया जाए। किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को कानूनी दर्जा दिया जाए। किसानों के कर्ज माफ कर उन्हें आर्थिक राहत प्रदान की जाए।
- राजनीतिक न्याय की रक्षा की जाए। सभी सामाजिक समूहों को समान राजनीतिक भागीदारी मिलनी चाहिए। लोकतंत्र और समानता की रक्षा संविधान की भावना के अनुसार होनी चाहिए।

भाजपा सरकार तानाशाही चला रही

उमंग सिंघार ने कहा कि यह अभियान केवल कांग्रेस का नहीं, बल्कि संविधान, लोकतंत्र और आम नागरिकों की आवाज़ की रक्षा का राष्ट्रीय आह्वान है। वर्तमान सरकार लोकतंत्र नहीं, बल्कि तानाशाही चला रही है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर गंभीर हमला हो रहा है। देश के युवा बेरोजगारी से जूझ रहे हैं। लेकिन, विदेशी कंपनियों को लगातार ठेके दिए जा रहे हैं। सरकार न तो देश के युवाओं को पर्याप्त रोजगार दे पा रही है और न उन्हें प्राथमिकता दे रही है।

संविधान ने हमें बोलने की आजादी दी है, लेकिन भाजपा सरकार आलोचना को सहन नहीं कर पाती। पत्रकारों पर हमले और पत्रकारों की गिरफ्तारी, समाचार माध्यमों पर दबाव और सोशल मीडिया पर निगरानी यह दर्शाते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में है। विपक्ष को बोलने का अवसर नहीं मिल रहा है, सवाल उठाने पर उन्हें दबाया जा रहा है, जो केवल लोकतंत्र ही नहीं, बल्कि देश के भविष्य के लिए भी घातक है। आदिवासी और दलित समुदायों पर अत्याचार बढ़े हैं। बालाघाट में आदिवासी लड़कियों के साथ बलात्कार की घटना अत्यंत निंदनीय और शर्मनाक है। कांग्रेस पार्टी इस घटना की घोर भर्त्सना करती है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करती है।

कांग्रेस की प्रमुख चिंताएं

- बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी पर सरकार की विफलता।
- न्यायपालिका की गिरती साख।
- सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग।
- एमएसएमई सेक्टर की उपेक्षा।
- किसानों और मजदूरों की समस्याओं की अनदेखी।

जनगणना-2021 अब तक क्यों नहीं

सरकार द्वारा 2021 की जनगणना अभी तक नहीं कराना गंभीर चिंता का विषय है। कांग्रेस ने जो तीन प्रमुख बिंदु सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय उठाए हैं, वे केवल नारे नहीं, बल्कि देश की आम जनता की वास्तविक और ज़रूरी मांगें हैं। यदि जातिगत जनगणना कराई जाए, तो यह साफ हो जाएगा कि इन तीनों क्षेत्रों में न्याय अभी भी अधूरा है। भाजपा सरकार जातिगत जनगणना न कराकर एक बड़ा षड्यंत्र रच रही है। यह समझना ज़रूरी है कि जब देश इससे भी कठिन हालातों से गुज़रा है, तब भी जनगणना नहीं रोकी गई। फिर अब ऐसा क्या कारण है कि जातिगत जनगणना को टाला जा रहा है? क्या सरकार नहीं चाहती कि पिछड़े, दलित और आदिवासी वर्गों को उनका वास्तविक हक और प्रतिनिधित्व मिले। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि पहलगाम की घटना बेहद निंदनीय है। हम सभी दिवंगतों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके परिजनों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

फर्जी टीपी कांड में 4 महीने बाद वन विभाग ने मामला दर्ज किया

न तो आरा मशीन सील की और न ट्राले के मालिक पर कार्रवाई

इंदौर। चर्चित फर्जी ट्रांजिट परमिट (टीपी) कांड में आखिरकार चार माह बाद वन विभाग ने संदीप सिंह वाशु के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया। 24 दिसंबर 2024 को कस्तूर टॉकीज के पास सीसीएफ उड़न दस्ते द्वारा की गई कार्रवाई में दो ट्राले पकड़े गए थे, इनमें आम की लकड़ी भरी थी। एक गाड़ी फर्जी टीपी के आधार पर इंदौर लाई गई थी। कार्रवाई के चार महीने बाद अब जाकर इस मामले में संदीप सिंह वाशु पर आईपीसी की धारा 420 के तहत मुकदमा दर्ज किया जाना था। लेकिन, अधिकारियों की मिलीभगत के चलते मामला दबा दिया गया। विभाग पर यह भी आरोप है कि उसने अब तक संबंधित थाने में कोई एफआईआर तक दर्ज नहीं करवाई।

सवाल यह भी उठ रहा है कि ये ट्राले फर्जी टीपी पर अशोकनगर और गुना से इंदौर

तक आए। रास्ते में कई चेक पोस्ट पार करने के बाद इंदौर पहुंचे। किंतु, कहीं दस्तावेजों की कोई जांच नहीं की गई। इससे यह आशंका और गहरी हो जाती है कि ट्रकों के इस अवैध आवागमन में विभाग के बड़े अफसरों की मिलीभगत हो सकती है। शिकायतकर्ता ने डिप्टी रेंजर अनिता भंडोले की भूमिका पर भी सवाल उठाए हैं, जिन पर मामले को नजरअंदाज करने का आरोप है। उल्लेखनीय है कि जिस संदीप पर अब केस दर्ज किया गया, उसने कुछ समय पहले वनरक्षक जुनैद अली से मारपीट भी की थी।

डीएफओ प्रदीप मिश्रा के निर्देश पर की गई ताजा कार्रवाई में संदीप के खिलाफ केस दर्ज किया गया और अब उसके कारोबार एवं फर्जी टीपी नेटवर्क की गहन जांच की बात कही जा रही है। विभाग का कहना है कि संदीप के खिलाफ ठोस कार्रवाई की जाएगी और दोषी अधिकारियों को भी नहीं बख्शा जाएगा।

विभाग ने यह कदम उठाया है, जिससे उसकी कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

जानकारी के अनुसार, ट्राला (एमपी-67-एच-0240) संदीप इंटरप्राइजेज की आरा मशीन पर खाली हो रहा था। जबकि, दूसरा ट्राला (पीबी-11-सीजे-4687) बाहर खड़ा मिला। जांच में सामने आया कि एमपी-67-एच-0240 की टीपी फर्जी थी, वहीं पीबी-11-सीजे-4687 पर सरकारी हैमर (मुहर) नहीं लगी थी, जो अवैध लकड़ी परिवहन की पुष्टि करता है। सीसीएफ उड़नदस्ते ने तत्काल पंचनामा बनाकर दोनों ट्राले जब्त कर इंदौर रेंज अधिकारियों को सौंप दिए। इसके बावजूद रेंज अधिकारियों ने न तो संदीप इंटरप्राइजेज की आरा मशीन सील की और न ट्राले के मालिक या ड्राइवर पर कोई कार्रवाई की गई। ड्राइवर को मुचलके पर छोड़ दिया गया।

वन विभाग के सूत्रों का कहना है कि

बेतवा नदी पर संकट! यूपी में थम गई जलधारा

● भीषण गर्मी से नाले में तब्दील हो गई पौराणिक नदी, गहराया संकट ● पैदल ही पार कर रहे लोग, तटवर्ती इलाकों के सैकड़ों गांवों में चिंता

हमीरपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में जीवनदायिनी बेतवा नदी अब सूरज की तपिश में नाले में तब्दील होने के मुहाने आ गई है। अप्रैल महीने के दूसरे पखवारे की शुरुआत में ही बेतवा नदी का प्रवाह थम गया है। कई जगहों पर इसकी जलधारा विलुप्त हो गई है। इस नदी की दुर्दशा प्रतिबंधित मशीनों से मौरंग खनन के कारण हुई है। बेतवा नदी पर मंडराए संकट को लेकर तटवर्ती इलाकों के गांवों के लोगों में बेचैनी देखी जा रही है। खासकर अवारा मवेशियों के सामने पीने के पानी का संकट गहरा गया है। हमीरपुर में जलवायु कर्क रेखा के समीप रहने से यमुना नदी के उत्तरी भाग की अपेक्षा शुष्क भी रहती है। यमुना नदी 77 किलोमीटर की लम्बाई में बहकर ढाई सौ वर्ग किमी क्षेत्र को ऊबड़ खाबड़ बनाए है। कमोबेश यही स्थिति बेतवा नदी की है, जो सूख गई है। लिफ्टर और पोकलैंड जैसी

प्रतिबंधित मशीनों से दिन रात मोरम का खनन होने के कारण बेतवा नदी का अस्तित्व अब खतरे पर पड़ गया है। किसी जमाने में गर्मी के दिनों में लोग नाव से बेतवा नदी पार करते थे लेकिन अब लोग पैदल ही नदी पार कर रहे हैं। इसका जल भी अब आचमन करने लायक नहीं रहा। भीषण गर्मी में किसी जमाने में यह नदी पानी से लबालब रहती थी। इसकी जलधारा का प्रवाह तेज था। यहां के लोग सुबह और शाम नदी किनारे घूमने जाते थे। मगर अब तो पूरी नदी में जलधाराएं नहीं बची हैं। बीच-बीच में थोड़ा बहुत पानी जरूर देखने को मिल जाता है। निषाद लोगों ने नदी के बीच रेत में ही सब्जी की बारी लगा रखी है। इस नदी की दुर्दशा भी देखिए कि इसे कोई भी पैदल पार कर सकता है।

सूरज की तपिश में कई किमी के दायरे में नाले में तब्दील हो गई है। हमीरपुर शहर के डिग्गी रमेड़ी के पास बेतवा नदी किनारे गहरे पानी में कई दशक पहले लगाई गई लिफ्ट केनाल का संचालन ठप हो गया है जबकि सहजना गांव के पास बेतवा नदी में संचालित लिफ्ट केनाल भी पानी कम होने के कारण प्रभावित हुई है।

पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट, 3 की मौत

● शवों के उड़े चीथड़े, पॉलिथीन में बटोर ले गई पुलिस

सहारनपुर (एजेंसी)। यूपी के सहारनपुर के देवबंद में शनिवार सुबह एक पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट हो गया। हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई है। मौतों का आंकड़ा बढ़ सकता है, क्योंकि घटना के वक्त फैक्ट्री के अंदर 10 से ज्यादा लोग मौजूद थे। विस्फोट इतना जोरदार था कि पूरी बिल्डिंग ढह गई। शवों के चीथड़े 100 से 150 मीटर दूर तक जा गिरे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि धमाके की आवाज 2 किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। विस्फोट के समय ऐसा लगा जैसे भूकंप आ गया हो।

हरियाणा में दर्दनाक हादसा, 7 लोगों की मौत

● पिकअप ने सफाई करने आए 11 लोगों को कुचला ● एक्सप्रेस वे पर बिखरी लाशें, कई शवों के 2 टुकड़े हुए

नूंह (एजेंसी)। हरियाणा के नूंह में शनिवार सुबह दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर तेज रफ्तार पिकअप ने 11 लोगों को कुचल दिया, जिसमें 6 महिलाओं की मौत हो गई। वहीं व्यक्ति की इलाज के दौरान मौत हो गई। हादसे में 4 महिलाएं गंभीर घायल हैं। हादसा इतना भयानक था कि कई शवों के 2 टुकड़े हो गए। ये सभी एक्सप्रेसवे पर सफाई का काम करने आए थे। मरने वालों में 4 महिलाएं एक ही परिवार की थीं। हादसा सुबह करीब 10 बजे हुआ। सूचना के बाद फिरोजपुर झिरका थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मृतकों के शवों को अल आफिया अस्पताल मांडीखेड़ा में रखवाया। जानकारी के मुताबिक इब्राहिमबास गांव के पास दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर सफाई का काम चल रहा है। ठेकेदार ने कई गांवों के लोगों को इस काम में लगाया हुआ है। शनिवार सुबह 11 लोग सफाई करने के लिए पिकअप गाड़ी से उतर रहे थे। इसी दौरान गुरुग्राम की तरफ से आई तेज रफ्तार पिकअप गाड़ी ने उन्हें कुचल दिया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि 6 महिलाओं ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं, एक पुरुष और 4 महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं। सभी को अस्पताल पहुंचाया। यहां पुरुष ने भी दम तोड़ दिया। घायल महिलाओं में से 2 की हालत नाजुक बनी हुई है, जिन्हें नल्हड़ मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया गया है। हादसे के बाद एक्सप्रेसवे पर लाशें बिखरी दिखीं। कई शवों के टुकड़े हो गए।

सतना में अमुआ डैम में नहाने गए तीन बच्चे डूबे

गहरे पानी में उतर गए थे, ग्रामीणों ने निकाले तीनों के शव

सतना (नप्र)। सतना जिले के धारकुंडी थाना क्षेत्र में शनिवार को अमुआ बांध में नहाने गए तीन आदिवासी बच्चे गहरे पानी में डूब गए, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी और आधे घंटे के भीतर तीनों के शव बाहर निकाल लिए।

बच्चों के डूबने की खबर मिलते ही मझगवां तहसीलदार सोमेश द्विवेदी और धारकुंडी थाना प्रभारी शैलेंद्र सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। प्रशासनिक अधिकारियों ने घटनास्थल का जायजा लिया और परिजन को हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। तहसीलदार ने मौके पर ही रेडक्रॉस के जरिए मृतकों के परिजन को 25-25 हजार रुपए की सहायता राशि दी।

भोपाल के इंजीनियर की दुल्हन पाकिस्तान में फंसी, वीजा रोका

● पहलगाम हमले के बाद भारत आने की अनुमति नहीं

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के हार्डवेयर इंजीनियर उवैस की दुल्हन हिरा पाकिस्तान में फंस गई है। पहलगाम आतंकी हमले के पाकिस्तान ने उनके वीजा को मंजूरी नहीं दी। इससे उनका भारत आना एक बार फिर टल गया। यह पहली बार नहीं है जब राजनीतिक हालात ने उनके रिश्ते में रुकावट डाली है। इससे पहले पुलवामा हमले के समय भी इनकी शादी की तैयारियां अंतिम दौर में थीं। हिरा अपने परिवार के साथ भारत आने वाली थी लेकिन हमले के बाद वीजा अस्वीकृत हो गया। तब ऑनलाइन निकाह ही आखिरी विकल्प बचा था। मार्च 2024 में ही दोनों ने ऑनलाइन निकाह किया था।

जल्दी ही कई रूट पर चलेगी वंदे भारत स्लीपर ट्रेन

● कोलकाता में नई फैक्ट्री की शुरुआत, टीआरएसएल और बीएचईएल ने मिल कर लगाई

कोलकाता (एजेंसी)। देश में पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन चलने के लिए तैयार है। इस तरह की पहली रेलगाड़ी नई दिल्ली से कोलकाता के हावड़ा स्टेशन के बीच चलेगी। इसके लिए दो ट्रेन सेट बना कर तैयार कर लिया गया है। अब अन्य मार्गों पर भी इस ट्रेन को चलाने की तैयारी है, लेकिन इसके लिए पर्याप्त प्रोडक्शन नहीं हो पा रहा है। लेकिन अब यह शिकायत भी दूर हो जाएगी। आज ही कोलकाता के उत्तरपाड़ा में एक वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की फैक्ट्री की शुरुआत हुई है। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की नई फैक्ट्री कोलकाता के उत्तरपाड़ा में बनी है। इसे टीटागढ़ रेल सिस्टम्स लिमिटेड (टीआरएसएल) और भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल) ने मिलकर बनाया है। उन्होंने वहां वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों के लिए एक खास प्रोडक्शन लाइन बनाई है। टीआरएसएल के वाइस चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर उमेश चौधरी और बीएचईएल की डायरेक्टर बानी वर्मा ने इस प्रोडक्शन लाइन का उद्घाटन किया। टीआरएसएल को भारतीय रेलवे से 80 वंदे भारत स्लीपर ट्रेन सेट बनाने का कॉन्ट्रैक्ट मिला है। यह कॉन्ट्रैक्ट टीआरएसएल और बीएचईएल के बीच एक समझौते के तहत हुआ है। उत्तरपाड़ा यूनिट में अब काम शुरू हो गया है। उम्मीद है कि पहली ट्रेन अगले साल तक बनकर तैयार हो जाएगी। इस फैक्ट्री में इंडस्ट्री 4.0 की खूबियां हैं और रोबोट से काम करने वाली लाइनें भी हैं।

जमानत पर जेल से बाहर आए नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे

विधायक प्रतिनिधि के साथ मारपीट के आरोप में हुई थी जेल, बोले - जंग जारी रहेगी

इंदौर (एजेंसी)। बीजेपी विधायक प्रतिनिधि कपिल पाठक और उसके परिवार के लोगों के साथ हुई मारपीट के मामले में जेल में बंद नगर निगम के नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे शनिवार को जेल से जमानत पर बाहर आ गए। कोर्ट ने गवाहों को ना धमकाने और जांच में सहयोग करने की शर्त पर जमानत दी है। शनिवार दोपहर को सेंट्रल जेल से बाहर आने के बाद चिंटू ने कहा कि अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग जारी रहेगी। पिछले शनिवार को हीरा नगर थाना क्षेत्र में पानी के ट्रेक्टर को हटाने को लेकर हुए विवाद में हीरा नगर पुलिस ने चिंटू चौकसे सहित 8 से ज्यादा लोगों पर विभिन्न धाराओं में केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने रविवार को चिंटू चौकसे को गिरफ्तार किया था। एमवाय में मेडिकल कराने के बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया। जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। पिछले सोमवार को कांग्रेस के कई नेता चिंटू चौकसे से मिलने जेल भी गए थे।

विधायक प्रतिनिधि कपिल पाठक के साथ मारपीट के मामले में गिरफ्तार नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे सहित तीन आरोपियों को जिला कोर्ट से जमानत दे दी। शुक्रवार को कोर्ट ने आदेश जारी कर दिया। पुलिस ने 20 अप्रैल को चिंटू, भतीजे रोहन, सुभाष यादव, ड्राइवर रवि प्रजापत के खिलाफ केस दर्ज किया था। इनमें से चिंटू, रवि और सुभाष को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। इनकी ओर से एडवोकेट संतोष शर्मा ने जमानत के लिए आवेदन लगाए थे। एडवोकेट शर्मा ने बताया कि शुक्रवार को सेशन जज अयाज मोहम्मद के समक्ष जमानत आवेदनों पर सुनवाई हुई। इसमें तीनों की जमानत के लिए तर्क रखे गए। शाम को कोर्ट ने 25 हजार के मुचलके पर जमानत का आदेश जारी किया। शनिवार दोपहर को चिंटू जेल से बाहर आए।

झूठा केस था, है और रहेगा

जेल से बाहर आने पर चिंटू ने कहा यह संपूर्ण रूप से झूठा केस था, है और रहेगा। ईश्वर ने हम सब लोगों की सुनी। आने वाले समय में पूरा शहर दूध का दूध और पानी का पानी देखेगा। अंधेर नगरी चौपट राजा है। ईश्वर ने हमें लड़ने की शक्ति दी है अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग जारी रहेगी। इधर, चिंटू चौकसे के बाहर आने की जानकारी मिलने पर जेल के बाहर समर्थकों का जमावड़ा लग गया। चिंटू चौकसे के बाहर आते ही उनका स्वागत किया।

इंदौर में कांग्रेस का बंद रहा बेअसर, दुकानें खोलीं

आतंकी हमले के विरोध में किया था आह्वान, लोग बोले- घटना से दुखी पर कांग्रेस हिंदू विरोधी

इंदौर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का विरोध मध्यप्रदेश में जारी है। इंदौर में कांग्रेस ने बंद का आव्हान किया था, लेकिन ज्यादातर प्रतिष्ठान खुले रहे। व्यापारियों का कहना है कि हम आतंकी हमले की घटना से दुखी हैं, लेकिन कांग्रेस हिंदू विरोधी है इसलिए पूरे क्षेत्र की दुकान खुली रखी गई हैं। बता दें कांग्रेस कमेटी ने सभी व्यापारिक संगठनों से 26 अप्रैल को दोपहर 2 बजे तक आधे दिन का स्वैच्छिक इंदौर बंद रखने की अपील की थी। इंदौर और भोपाल में आधे दिन के बंद के दौरान इमरजेंसी सेवा यानी, थोक दवा बाजार और मेडिकल स्टोर्स खुले रहें। भोपाल केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेंद्र धाकड़ ने बताया कि जरूरी सेवा होने की वजह से दुकानें खुली रखी, लेकिन बंद का पूरा समर्थन था। श्रद्धांजलि सभा में केमिस्ट शामिल हुए।व्यापारी एसोसिएशन के अध्यक्ष महेश तिवारी ने कांग्रेस को हिंदू विरोधी बताया और कहा कि इसलिए पूरे क्षेत्र की दुकान खुली रखी गई हैं।

इंदौर में बंद का मिला-जुला असर

इंदौर में बंद का मिला-जुला असर है। कई जगह बाजार बंद हैं। वहीं, एमआईजी क्षेत्र में सभी दुकानें खुली हुई हैं। तिलक नगर में अधिकांश दुकानें खुल गई। इंदौर में कांग्रेस के बंद का कोई खास असर देखने को नहीं मिल रहा है।

भस्म आरती दर्शन

भगवान महाकाल का त्रिशूल, त्रिपुंड, रुद्राक्ष की माला अर्पित कर आकर्षक श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार तड़के भस्म आरती के दौरान चार बजे मंदिर के पट खुलते ही पण्डे पुजारी ने गर्भगृह में स्थापित सभी भगवान की प्रतिमाओं का पूजन कर भगवान महाकाल का जलाभिषेक और दूध,दही, घी,शक्कर फलों के रस से बने पंचामृत पूजन किया। इसके बाद प्रथम घंटाल बजाकर हरि ओम का जल अर्पित किया गया। भगवान महाकाल को त्रिशूल त्रिपुंड रुद्राक्ष की माला अर्पित कर श्रंगार किया गया। मस्तक पर रजत चंद्र भांग चन्दन और गुलाब के फूल की माला अर्पित कर श्रृंगार करने के पश्चात कपूर आरती के बाद जटाधारी बाबा महाकाल को रजत मुकुट, त्रिपुंड अर्पित किया गया। ज्योतिर्लिंग को कपड़े से ढांककर भस्मी रमाई गई। भगवान महाकाल को ड्रायफ्रूट और आभूषण अर्पित किये। भस्म अर्पित करने के पश्चात शेषनाग का रजत मुकुट रजत की मुंडमाला और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ सुगन्धित पुष्प से बनी फूलों की माला अर्पित की। गुलाब के सुगंधित पुष्प धारण किये भगवान महाकाल ने। फल और मिष्ठान का भोग लगाया भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की और से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गयी। मान्यता है की भस्म अर्पित करने के बाद भगवान निराकार से साकार रूप में दर्शन देते है।

रात से बदला मौसम, सुबह छाए हुए थे बादल

दिन का पारा लगातार 40 डिग्री के पार ; रात में भी गर्मी बढ़ी, तेज लू के आसार

इंदौर(एजेंसी)। शहर में शाम से मौसम में बदलाव देखने को मिला, जिसका असर रात तक जारी रहा। पूर्वी इलाकों में हल्की बूंदाबांदी हुई। शनिवार सुबह से आसमान में बादल छाए हैं, हालांकि बीच-बीच में धूप भी निकल रही है। पिछले चार दिनों से दिन का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बना हुआ है। मौसम विभाग ने शनिवार को भी तेज गर्मी की संभावना जताई है। अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 1 डिग्री कम रहा। खास बात यह रही कि इस अप्रैल में पहली बार दिन का तापमान सामान्य से नीचे दर्ज हुआ है। वहीं, न्यूनतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2 डिग्री ज्यादा था। इसके चलते रात में भी गर्मी का असर महसूस किया गया। दरअसल जिस तरह मार्च के आखिरी चार पांच दिनों में गर्मी एकदम से कम हो गई थी, दिन का तापमान सामान्य से कम रिकॉर्ड हो रहा था, ठीक वैसी ही स्थिति अप्रैल के आखिरी पांच दिनों में बनती दिख रही है। अभी गर्मी को प्रभावित करने वाला वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हो रहा है। इसकी वजह से तापमान में कुछ कमी आएगी।

इस दौरान तापमान 39 से 40 डिग्री के बीच ही रहने वाला है। शुक्रवार को भी दोपहर में कई बार 20-25 किमी की रफ्तार से हवा 10-20 सेकेंड के लिए चली। दोपहर में देर तक धूप का रास्ता बादलों ने रोके रखा। फिर शाम को मौसम बदल गया। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक अगले चार दिन तक प्रदेश में हल्की बारिश और गरज-चमक के आसार हैं। कुछ जगहों पर लू भी चल सकती है। वहीं, गर्मी का असर भी देखने को मिलेगा। इंदौर में आज गर्मी का असर रहेगा।

इंदौर में मंदिर परिसर से भगवा झंडे हटाए

निगमकर्मी सीसीटीवी में कैद, रहवासी और हिंदू संगठन ने आंदोलन की दी चेतावनी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के विजय नगर क्षेत्र में हनुमान जयंती के बाद मंदिर परिसर में लगाए गए भगवा झंडे नगर निगम कर्मचारियों द्वारा हटाए जाने पर विवाद खड़ा हो गया है। घटना जोन-22 क्षेत्र स्थित बीसीएम हाइट्स के पीछे मंदिर परिसर की है, जहां भक्तों ने धार्मिक आयोजन और भागवत कथा के लिए भगवा ध्वज लगाए थे। स्थानीय रहवासियों और हिंदू संगठनों ने नगर निगम की इस कार्रवाई पर नाराजगी जताई है। उन्होंने आरोप लगाया कि निगमकर्मियों ने बुधवार को मंदिर परिसर से भगवा झंडे हटा दिए, जिसकी पुष्टि सीसीटीवी फुटेज से भी हुई है। अब लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि झंडे वापस नहीं लगाए गए तो नगर निगम का घेराव किया जाएगा।

सीएसआई पर झंडे हटवाने का आरोप

हिंदू संगठन के नेताओं मानसिंह, कृष्णा वाघ और राजावत ने आरोप लगाया कि निगम के जोनल अधिकारी के निर्देश पर सीएसआई वीरेंद्र चौहान और अन्य कर्मचारियों ने झंडे हटवाए। उन्होंने कहा कि भगवा झंडा हिंदू धर्म और आस्था का प्रतीक है, उसे हटाया जाना न सिर्फ धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाता है, बल्कि यह असहनीय भी है।

निगम अधिकारी बोले- गलतफहमी हुई, झंडे लगवाए जा रहे हैं

मामले पर जोनल अधिकारी शिवलाल यादव ने सफाई दी है। उनका कहना है कि निचले स्टाफ और एनजीओ के बीच समन्वय की कमी के कारण यह स्थिति बनी। उन्होंने बताया कि मौके पर जाकर स्थिति को तुरंत नियंत्रित किया गया। हालांकि, हिंदू संगठनों ने निगम की सफाई को अस्वीकार करते हुए मांग की है कि अधिकारी माफी मांगें और झंडे दोबारा उसी स्थान पर लगवाए जाएं। अन्यथा वे आंदोलन करेंगे।

इंदौर में शार्ट टर्म वीजा वाले पाकिस्तानियों की पहचान जारी

वापस भेजने की तैयारी में जुटी पुलिस, 27 अप्रैल तक लौटना होगा

इंदौर (एजेंसी)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद शार्ट टर्म, मेडिकल या टूरिज्म वीजा लेकर आए पाकिस्तानियों को चिह्नित कर वापस भेजा जा रहा है। इंदौर में भी पुलिस एक्शन मोड में आ चुकी है। पासपोर्ट सेक्शन में ऐसे सभी लोगों से संपर्क किया जा रहा है और उन्हें वापस भेजने प्रोसेस कराई जा रही है। इंदौर में कितने लोग हैं इसकी सूची तैयार कर उन्हें वापस भेजने के लिए बातचीत की जा रही है। एडिशनल पुलिस कमिश्नर अमित सिंह ने बताया-पहलगाम घटना के बाद भारत सरकार के स्पष्ट निर्देश आए हैं, जो शॉर्ट टर्म वीजा पर है, जो मेडिकल वीजा पर है जो टूरिज्म पाइंट ऑफ व्यू से आए है वीजा बनाकर उनको चिह्नित कर वापस भेजने के। इंदौर में आए ऐसे लोगों के चिह्नित किया जा चुका है। उसने बात की जा रही है। 27 अप्रैल आखिरी तारीख है। यहां से वापस भेजने की। ऐसे लोगों से हम बात कर रहे हैं। अमित सिंह ने बताया- हमारा पासपोर्ट सेक्शन लगातार एक्टिव मोड में है।

जो लॉन्ग टर्म वीजा वाले हैं, वे कंटिन्यू कर सकते हैं। कानून व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए संख्या का खुलासा नहीं किया जा सकता है। ऐसे लोगों की पाकिस्तान जाने के लिए जो प्रक्रिया है वह करवाई जा रही है। उन्हें कहा गया है कि एक्जिट परमिशन ले ले और यहां से 27 अप्रैल तक निकल जाए। मेडिकल वाले भी 29 अप्रैल तक यहां से निकल जाए।

दसवीं की छात्रा ने खाया जहरीला पदार्थ

परिचित ने इंस्टाग्राम पर शेयर कर दिए अश्लील वीडियो ; तलाश में जुटी पुलिस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक छात्रा के जहर खाने का मामला सामने आया है। छात्रा ने अश्लील वीडियो वायरल होने की बात से दुखी होकर आत्महत्या का प्रयास किया। मामले का खुलासा पीड़िता के अस्पताल पहुंचने के बाद हुआ है। पुलिस ने इस मामले में इंस्टाग्राम आईडी चलाने वाले और धमकाने वाले आरोपी पर केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू की है। वह भिंड का रहने वाला है।

2 साल पहले शादी में आया था आरोपी- परदेशीपुरा मेन रोड पर रहने वाली एक छात्रा जहर खाकर गुरुवार रात एमवाय पहुंची। अस्पताल प्रशासन की तरफ से पुलिस को जानकारी दी गई। इस मामले में महिला पुलिस लड़की के बयान लेने थाने पहुंचे। छात्रा ने बताया कि वह दसवीं क्लास की पढ़ाई कर रही है। दो साल पहले उनके यहां शादी थी। तब एक रिश्तेदार रामू यहां आया था। बाद में मेरे भाई का भी रामू से विवाद हो गया। उनकी आपस में बातचीत बंद सी है।

रील्स से निकाल लिए फोटो-वीडियो- छात्रा ने बताया कि वह इंस्टाग्राम चलाती है। यही पर रामू भी उससे जुड़ा हुआ है। कभी दोनों के बीच चेटिंग भी हो जाती है। दोनों एक-दूसरे के पोस्ट देखा करते थे। 23 अप्रैल को रामू ने उसकी खुद की आईडी से दो अश्लील वीडियो पोस्ट किए।

इंदौर में ट्रैफिक जाम से मिलेगी स्थायी राहत

गंगवाल से सरवटे तक सड़क निर्माण के लिए हटेगा अतिक्रमण; धार्मिक स्थल होंगे शिफ्ट

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के गंगवाल बस स्टैंड से सरवटे बस स्टैंड तक सड़क निर्माण काम प्रस्तावित है। शनिवार को इस काम को देखने महापौर अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ सड़क पर उतरे। निरीक्षण की शुरुआत गंगवाल बस स्टैंड से की गई। यहां से महापौर, जनप्रतिनिधि और अधिकारी सिलावटपुरा, मच्छी बाजार होते हुए पंढरीनाथ के सामने से सरवटे बस स्टैंड तक पहुंचे। इस दौरान विधायक मालिनी गौड़, विधायक गोलू शुक्ला, निगम आयुक्त शिवम वर्मा, एमआईसी सदस्य अभिषेक शर्मा बबलू, पार्षद भारत रघुवंशी, रूपाली पेंढारकर सहित नगर निगम और आईडीए के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

सड़क की बाधाओं को करेंगे दूर

इस सड़क के निर्माण के दौरान चार प्रमुख धार्मिक स्थल और कई अतिक्रमण सामने आए हैं, जो निर्माण कार्य में बाधा बन रहे हैं। महापौर ने आपसी सहमति से धार्मिक स्थलों के स्थानांतरित करने और अतिक्रमण हटाने का

निर्णय लिया है। सड़क निर्माण काम के लिए जनप्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से आग्रह कर 9 करोड़ रुपए का अतिरिक्त बजट स्वीकृत कराया है, जिससे कार्य को तेजी से पूरा किया जा सकेगा।

ट्रैफिक जाम से मिलेगी राहत

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि गंगवाल से सरवटे बस स्टैंड तक की यह सड़क, शहर के एक महत्वपूर्ण ट्रैफिक कॉरिडोर को सुगम बनाएगी। इस सड़क के निर्माण के बाद पश्चिमी क्षेत्र के ट्रैफिक में सुगमता आएगी। साथ ही भविष्य में एयरपोर्ट कनेक्टिविटी को और मजबूत करने के लिए भी इस मार्ग का विशेष महत्व होगा। हम सबका प्रयास है कि इंदौर का ट्रैफिक सुगम बने। लोगों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए विकास कार्यों में तेजी लाई जाएगी।

लोगों से की अपील- स्वेच्छा से हटाएं अतिक्रमण- महापौर ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि स्पष्ट टाइम टेबल तैयार कर सार्वजनिक किया जाए। साथ ही निर्माण क्षेत्र में सेंट्रल लाइन बनाकर अतिक्रमण की स्थिति स्पष्ट की जाए, जिससे लोगों को जानकारी मिल सके कि किन निर्माणों को कितना हटाया जाएगा। महापौर ने कहा कि हमारा प्रयास है कि बारिश के पहले यानी जून अंत तक सड़क बनाने का काम शुरू हो जाए। महापौर पुष्यमित्र भार्गव का कहना है कि धार्मिक संगठनों से संवाद कर समाधानात्मक सहमति से काम को आगे बढ़ाया जाएगा। इधर, उन्होंने लोगों से अनुरोध किया है कि वे स्वेच्छा से अतिक्रमण हटाए और शहर के विकास में सहभागी बने।

सड़क पर उतरे महापौर-अधिकारी

चंदन नगर पर प्रस्तावित ओवरब्रिज स्थल का किया दौरा, डीपीआर तैयार करने को कहा

इंदौर (एजेंसी)। शहर के पश्चिमी क्षेत्र में ट्रैफिक की समस्या के स्थायी समाधान और बेहतर कनेक्टिविटी के लिए शहीद चंद्रशेखर आजाद (चंदन नगर) चौराहे पर ओवरब्रिज प्रस्तावित किया गया है। ओवरब्रिज की संभावित जगह का निरीक्षण करने महापौर पुष्यमित्र भार्गव, एमआईसी मेंबर राजेंद्र राठौर, निरजंन सिंह चौहान सहित आईडीए और निगम के अधिकारी सड़क पर उतरे। जिला अस्पताल से धार रोड को जोड़ने वाले रास्ते तक महापौर और अधिकारियों ने निरीक्षण किया और वहां की स्थितियों को जाना। इस दौरान रहवासी भी मौजूद रहे।

डीपीआर तैयार करने के दिए निर्देश- धार रोड से चंदन नगर होते हुए शहर में एंट्री करने वाले भारी ट्रैफिक को नियंत्रित करने के लिए ओवरब्रिज बनाना

प्रस्तावित किया है। महापौर ने फिजिबिलिटी रिपोर्ट के आधार पर डीपीआर तैयार करने के निर्देश दिए हैं। महापौर ने नगर निगम और आईडीए के अधिकारियों को तकनीकी सर्वे और आवश्यक प्रक्रिया जल्दी पूरी करने के लिए भी कहा है। इसके अलावा पश्चिमी रिंग रोड से एयरपोर्ट को जोड़ने वाली नई सड़क का भी उन्होंने दौरा किया, जिसका टेंडर कुछ दिनों में निकाला जाएगा। महापौर ने रहवासियों से स्वेच्छा से निर्माण हटाने और शहर के विकास में सहभागी बनने की अपील की है।

लोगों को आवाजाही में परेशानी ना हो- महापौर ने बताया कि यह परियोजना इंदौर के भविष्य की ट्रैफिक जरूरतों और शहरी विकास को ध्यान में रखकर प्रस्तावित की गई हैं। वे बोले कि हमने बजट में ओवरब्रिज की घोषणा की थी हमारा प्रयास है कि ट्रैफिक का दबाव कम हो और लोगों को आने-जाने में कोई परेशानी न हो। यह ओवरब्रिज चंदन नगर और धार रोड क्षेत्र के लिए एक बड़ी सौगात होगा, इसके लिए अधिकारियों को तकनीकी तैयारी जल्द पूरी करने के लिए कहा गया है।

मल्हारगंज थाने के लिए दूसरी जमीन की तलाश

मेट्रो प्रोजेक्ट - पलासिया पुलिस क्वार्टर और रानी सराय के विकल्प भी देख रहे

इंदौर (एजेंसी)। मेट्रो प्रोजेक्ट में जमीन अधिगृहण को लेकर अफसरों ने शुक्रवार को इंदौर पुलिस कमिश्नर कार्यालय में अफसरों से मुलाकात की। मेट्रो अफसरों की एक टीम एडिशनल कमिश्नर मुख्यालय मनोज श्रीवास्तव और एडिशनल कमिश्नर लॉ एंड ऑर्डर अमित सिंह के साथ मेट्रो प्रोजेक्ट में बाधक निर्माण देखने पहुंचे। एडिशनल कमिश्नर मनोज श्रीवास्तव ने बताया विजय नगर थाना, पलासिया पुलिस क्वार्टर और मल्हारगंज थाना व कनाड़िया इलाके में मेट्रो प्रोजेक्ट के अफसरों के साथ दौरा किया। पश्चिम क्षेत्र में मल्हारगंज थाने की बिल्डिंग व पुलिस क्वार्टर के कुछ मकान हटाए जाने हैं। इसे लेकर मेट्रो अफसरों से आईडीए की खाली जमीन पर थाने व क्वार्टर के लिए स्थान देखे गए हैं। वहीं प्रोजेक्ट के तहत बनाई जा रही स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट की बिल्डिंग का भी मुआयना किया गया। थाने का नया भवन मेट्रो ट्रेन प्रोजेक्ट की टीम द्वारा तैयार किया जाना है। इसके लिए मल्हारगंज थाना भवन से करीब 300 मीटर दूर स्थित आईडीए की एक जमीन भी देखी है।

जमीन प्रशासन आवंटित करेगा, निर्माण मेट्रो कंपनी करेगी

विजय नगर थाने को भी मेट्रो के कारण शिफ्ट किया जाएगा। पुलिस अफसरों का कहना है कि थानों के सीमांकन के आधार पर उचित जमीन आवंटित होने के बाद चयनित शासकीय जमीन को लेकर मेट्रो अधिकारियों के जरिये एक प्रस्ताव कलेक्टर के समक्ष भेजेंगे।

कहानी

सुदर्शन व्यास

ईश्वर की देहरी

लगभग पाँच - छह साल का मासूम बच्चा अपनी छोटी बहन को लेकर मंदिर के एक तरफ कोने में बैठा हाथ जोड़कर भगवान से बातें कर रहा था..। मैले कपड़े पहने मन्दिर की पौड़ी पर बैठे उस बच्चे के गाल आँसूओं से भीग चुके थे...। आते - जाते लोग उसे एक नजर देखते जरुर थे, लेकिन वह इन सबसे अनजान अपने भगवान से बातों में लगा हुआ था।

जैसे ही वह उठा एक अजनबी ने उसका हाथ पकड़ा और पूछा-

क्या मांगा भगवान से...?

उसने कहा - मेरे पापा मर गए हैं उनके लिए स्वर्ग, मेरी माँ रोती रहती है उनके लिए सब्र और मेरी बहन माँ से स्कूल जाने की जिद करती है उसके लिए पैसे...।

तुम स्कूल जाते हो (अजनबी का सवाल स्वाभाविक-सा सवाल था)

हां जाता हूं....(उसने कहा)

कौन सी कक्षा में पढ़ते हो ? (अजनबी ने पूछा)

नहीं अंकल पढ़ने नहीं जाता...मां चने बना देती है, वह स्कूल के बच्चों को बेचता हूँ, बहुत सारे बच्चे मुझसे चने खरीदते हैं, हमारा यही काम - धंधा है (बच्चे का एक - एक शब्द अजनबी के सीने में चुभता हुआ धंस रहा था)

तुम्हारा कोई रिश्तेदार (न चाहते हुए भी अजनबी बच्चे से पूछ बैठा)

पता नहीं...माँ कहती है गरीब का कोई रिश्तेदार नहीं होता...।

पर अंकल....मुझे लगता है मेरी माँ कभी - कभी झूठ बोलती है, जब हम खाना खाते हैं न तो हमें देखती रहती है, जब कहता हूँ..माँ तुम भी खाओ, तो कहती है मैंने खा लिया था, उस समय लगता है माँ झूठ बोलती है...।

बेटा अगर तुम्हारे घर का खर्च मिल जाय तो पढाई करोगे ?

बिल्कुल नहीं

क्यों

पढ़ाई करने वाले गरीबों से नफरत करते हैं अंकल...

हमें किसी पढ़े - लिखे ने कभी - कुछ नहीं पूछा..बगल से गुजर जाते हैं'..।

हर दिन इसी मंदिर में आता हूँ, कभी किसी ने देखा तक नहीं। यहां सब आने वाले मेरे पिताजी को जानते थे, मगर अब हमें कोई नहीं जानता अंकल..।

बच्चा रुंधे गले बोला - अंकल जब बाप मर जाता है तो सब अजनबी क्यों हो जाते हैं ?

ईश्वर की देहरी पर मानवता को अपाहिज देख इस बार अजनबी शर्मिंदा-सा खड़ा था। अजनबी का मौन और बच्चे की वाक- पट्टुता यूं तो विरोधाभासी अभिव्यक्ति थी लेकिन दोनों के मन आपस में बात करना चाह रहे थे। अजनबी ने एकपल सोचा कि इसका हाथ छुड़ा लूं। आखिर लगता कौन है ये मेरा ? आखिर क्यों मैं इसकी मदद के लिए अनायास रुक गया ? अंतर्मन और दिमाग के बीच चल रहे संवाद में अजनबी धंसता जा रहा था।

मेरा भी तो इसी तरह किसी ने हाथ थामा था कभी! जब बाबूजी हम दोनों भाई बहन को काका के भरोसे छोड़ गए थे। हम भी तो काका को बाबूजी से बढ़कर मानते थे, लेकिन काका की कहां गलती है ? उन्होंने तो हमें खूब दुलार दिया, अपने बच्चों से बढ़कर माना था। लेकिन अपना ही बच्चा क्यों नहीं माना, अपने बच्चों से बढ़कर मानने की क्या जरुरत थी ? क्यों मुझे अनाथों की तरह अकेला छोड़ दिया और सारे रिश्ते तोड़ लिये थे ? खैर, अहसान तो उनका फ़िर भी मुझपर है, कि मेरी बहन को उन्होंने अपने पास रखा। अब तो बड़ी हो गई होगी, शादी भी हो गई होगी और बच्चे भी होंगे। कितने प्यारे बच्चे होंगे...मेरी बहन मुझे याद तो करती होगी कभी!!

बच्चे ने जब हाथ झटकना चाहा और तेज़ आवाज़ में पुकारा.... अंकल, क्या हुआ ? मेरा हाथ तो छोड़िये ?

अजनबी की तंद्रा टूटी, उसकी आंखे भर आई थी क्योंकि उस बच्चे में उसने खुदका बचपन देखा था।

बेटा...असल में लोग मंदिरों में भगवान से मांगने जाते हैं, लेकिन भगवान को कभी नहीं मांगते। ये इसलिए भी क्योंकि लोगों को भगवान से मोह नहीं है, बल्कि उनकी अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं से मोह होता है। अपना काम होने के बाद ईश्वर की देहरी की तरफ़ भी कोई देखना पसंद नहीं करता, बल्कि होना ये चाहिए कि हमारे बुरे वक्त में यदि हमें मदद मिली है तो अच्छे वक्त में हम किसी के बुरे वक्त में साथ खड़े रहें। यही जीवन है, अच्छे और बुरे कर्म भी ऐसे ही तो बनते होंगे।

लेकिन, मेरे पापा ने तो हमेशा सबकी मदद ही की है। मरते...मरते भी लोगों की मदद करते रहे। फ़िर हमें क्यों ये सब सहना पड़ रहा है अंकल ?

अजनबी बच्चे की इस बात पर निरुत्तर था, लेकिन उसने बच्चे की बात काटते हुए कहा..

सुनो बेटा, अपने पिताजी के बारे में बताओगे प्लीज़?

(अजनबी अब बच्चे के बगल में ही सीढ़ियों पर बैठ गया था।)

मेरे पिताजी, क्यों आपको क्यों जानना है अंकल ?

बस यूं ही...ये समझो कि तुम अपने मामा से बात कर रहे हो ?

इतना सुनकर बच्चे की आंखों में चमक लौट आई और कहने लगा...

मामा... अंकल मां अक्सर कहती है, कि तुम्हारे मामा ज़िन्दा होते तो हमें ये दिन नहीं देखना पड़ते। मेरे मामा बचपन में ही मां से बिछड़ गये थे। पता है अंकल, मां कहती है कि मामा छुटपन में मेरी मां से वो खूब प्यार करते थे, उनकी खूब देखभाल करत थे।

अजनबी एक बार फ़िर से खो गया था बच्चों की बातों में और सोचने लगा कि इस बच्चे में मुझे आखिर क्यों कोई अपना नज़र आता है। आखिर क्यों इससे बात करने को जी चाह रहा है। जी चाहता है कि इसके सारे दुःखों को अपना बनालूं और इसे वो हर खुशी मुकम्मल करुं जो ये चाहता है। हे ईश्वर...ऐसा तो मुझे कभी महसूस नहीं हुआ। सैकड़ों बच्चों को देखा है और मिला भी हूं...फ़िर इसमें ऐसा क्या है कि दूर जाने को जी नहीं करता!

बच्चे ने अबकी बार फ़िर अजनबी का हाथ पकड़ा और कहने लगा...

अंकल आप बार -बार कहां खो जाते हो ? सीधे - सीधे कहिए न कि आप भगवान जी के दोस्त हो। उन्होंने आपको हमारी मदद करने भेजा है। मां कहती है कि भगवान जी एक दिन ज़रुर अपने दोस्त को हमारी मदद करने भेजेंगे और फ़िर सब ठीक हो जाएगा।

बच्चे के इस भोलेपन पर अजनबी की आंखें फिर गीली थी और गला भरा हुआ। वो अब रुकना नहीं चाहता था, वापस घर जाने के लिए मुड़ा तो बच्चे ने हाथ पकड़कर कहा कि अंकल मंदिर में अंदर नहीं जाओगे ?

इस बार अजनबी खुद को रोक नहीं सका और रोते हुए कहा सिर्फ इतना कह पाया कि...

नहीं बेटा... मुझे आज देहरी पर ही भगवान मिल गए....वादा करो कल इसी वक्त यहीं मिलोगे। और घर जाकर मां से कहना कि भगवान ने दोस्त नहीं बल्कि उनके मामा को ही वापस भेजा है।

अजनबी अपनी कार में बैठकर वापस लौट गया...धूल के गुबार के साथ कार गायब हो गई थी, बच्चे ने वापस मंदिर की तरफ़ पलटकर भगवान को धन्यवाद दिया और घर की तरफ़ दौड़ने लगा।

बच्चे की खुशी का ठिकाना नहीं था, घर आते ही मां से लिपट गया और कहने लगा कि...

मां तुम मामा तुम कभी झूठ नहीं बोलती हो!! पता है, भगवान ने तुम्हारी बात सुन ली। तुम कहती थी न कि भगवान अपने दोस्त को एक दिन भेजेंगे और हमारी खुशियां लौटेगी!! मां...आज भगवान ने अपने पास से मामा को हमारे लिए भेज दिया। वो कल आयेंगे हमसे मिलने।

कलेजे से लिपटे हुए भोले बच्चे की खुशी और आंसू को देखकर वो कुछ समझ नहीं पा रही थी। बेटे को दुलारते हुए उसने कहा कि आखिर हुआ क्या है बेटा ? कौन मामा आएंगे ? कहां था तू ? किससे मिलकर आया है मेरे बच्चे ? इस तरह अजनबियों से नहीं मिला करते मेरे लाल। तू ही तो सहारा है अब मेरा।

बेटे ने मंदिर वाली सारी बात मां को बताई...और अगले दिन उसे भी मंदिर चलने की जिद करने लगा। मां ने बेटे की बात रखने के लिए हां तो की लेकिन उसके मन में एक डर बैठ गया था कि कोई अजनबी अचानक ऐसे क्यों अपनापन दिखाएगा ? हो सकता है कि अपने पति का कोई दोस्त हो, जो पुराने पैसे लौटा रहा हो ? इसी उधेड़बुन में सारी रात कट गई और अगली सुबह बच्चा सबसे पहले तैयार होकर मंदिर जाने की जिद करने लगा।

मां...बेचारी करती भी क्या!! बेटे की ज़िद के चलते उसे हारना पड़ा और डरी सहमी हुई अपनी छोटी बेटी को पीठ पर लादकर मंदिर की तरफ बढ़ चली। मंदिर की सीढ़ियों पर बैठकर मां - बेटे अजनबी का इंतज़ार कर रहे थे।

सामने से आती गाड़ी को देखकर बच्चे की आंखों में चमक लौटी और मां को झिंझोड़ता हुआ कहने लगा...देखो मां, यही वो गाड़ी है। इसी गाड़ी में तो आए थे मामा!

मंदिर के सामने गाड़ी रुकी और अजनबी की आंखें मंदिर की सीढ़ियों पर उस बच्चे को ढूंढने लगी, तभी सामने से दौड़ता हुआ बच्चा अजनबी से लिपट गया।

बच्चे ने कहा मामा! देखो, आज मां को भी साथ लाया हूं।

अजनबी ने जैसे ही बच्चे की मां को देखा तो फफककर रोने लगा। अपने पैरों से लिपटे बच्चे को बाहों में भरकर रोने लगा। बच्चे की मां के पैरो में गिड़गिड़ाता हुआ....मां - बेटों से माफ़ी मांग रहा था।

बच्चे की मां कुछ समझ पाती तभी अजनबी की गाड़ी से काका उतरे। इस बार काका के चेहरे पर पछतावे के आंसू साफ़ दिखाई दे रहे थे। अपनी भतीजी और पोतों से माफ़ी मांगकर कहने लगे...

तुम्हारी इस दुर्दशा का कारण मैं हूं मेरे बच्चों....तुम दोनों भाई - बहन को मेरे कारण वियोग सहना पड़ा। ज़मीन और पैसों के लालच में अपने सगे भाई के बच्चों को मैंने बेदखल कर दिया। हे भगवान....मुझे मौत भी नहीं आती। मुझे माफ़ करदो मेरे बच्चों....मुझे माफ कर दो।

ईश्वर की देहरी पर...इस बार अन्याय अपाहिज था और न्याय जीत गया था।

कविता

गुलमोहर

कमलेश कुमार दीवान

गुलमोहर खिल उठे,हुआ क्या है
शुष्क मौसम हवा की गर्मी ने
शाख पत्ते तना ,छुआ क्या है
गुलमोहर आपको हुआ क्या है।
पेड़ मुरझाए सर झुकाए हैं
दूब धरती लगी,लता सूखी

डाली डाली हुई बड़ी रूखी
बहुत उबी हुई बहारें है
कहर बरपाती सी बयारे हैं
टुकड़ों टुकड़ों में टूटते बादल
रूठी रूठी दिखी फुहारें है
दरकी धरती है बाग सूना सा ,
बागबां चुप हैं दुःख है दूना सा
न बोलती है चिरैया, तितलियां भी गुम
फूल तो फूल हैं रंग भी तो दिए उसने
बिछ गए सिजदा में दुआ की है किसने
हमने फूलों को कब दिया क्या है?
गुलमोहर खिल उठे, हुआ क्या है?

(लघुकथा)

रामेश्वरम तिवारी

विश्वास

पिछली रात आर्यन ने सपने में देखा कि उसकी माँ अमरता का अभिशाप झेल रही है। वह सात रंग की चुनरिया पहने हुए है। जोकि जगह-जगह से फटी चुकी है। कातर स्वर में ज़ोर-शोर से चीख-पुकार कर रही है- 'आर्यन! मुझे बचा लो मुझे बचा लो!'

यह देखकर आर्यन पसीने में तरबतर हड़बड़ाकर उठ खड़ा होता है। घर की सारी बत्तियाँ जला देता है। बंद खिड़कियाँ खोल देता है। पति के इस तरह अचानक हड़बड़ाकर उठ-बैठने पर बग़ल में लेटी हुई अपराजिता भी जाग उठती है। उसने देखा कि उसका पति गंभीर मुद्रा में खिड़की से बाहर आकाश में थिर दृष्टि से एकटक ध्रुव तारे को ताक रहा है। वह भी पीछे से जाकर चुपचाप खड़ी हो जाती है। धीरे से पति के कँधे पर हाथ रखकर मधुर स्वर में पूछती है- 'आर्यन! क्या बात है। आधी रात के समय आप यहाँ अकेले खड़े होकर क्या सोच रहे है? लगता है किसी अनहोनी को लेकर हैरान-परेशान दिखाई पड़ रहे हैं।'

आर्यन ने पीछे मुड़कर एक नजर निर्लिप्त भाव से अपराजिता की ओर देखा और अपनी चिंता ज़ाहिर करते होते हुए बोला- 'देवी! अभी-अभी थोड़ी देर पहले मैंने एक बड़ा ही भयावह और विनाशकारी सपना देखा है। आकाश में काले, घने बादल छाए हुए हैं। भयंकर घन गर्जन हो रहा है। लगता प्रलंयकार बारिश होने वाली है। तेज रफ़्तार से हवा चल रही है। वहीं पर दूसरी ओर कुछ सिरफिरे हैं जो अपने मुँह को काले कपड़ों से ढके हुए कतारबद्ध चले आ रहे हैं। अपने हाथों में धारदार और मारक हथियार लिए हुए हैं। चारों दिशाओं से अंड-बंड-संड, मार-काट के नारे गूँज रहे हैं। आकाश रक्तिम हुआ जा रहा है। वे लोग मेरी माँ की इज्जत लूटना चाहते हैं। उसकी देह के टुकडे-टुकड़े कर बोटी-बोटी को चबा जाना चाहते हैं।'

अपराजिता ने आर्यन के हाथ को अपने हाथों से कसकर पकड़ा और आँखों में आँखें डालकर सांत्वना भरे स्वर में बोली- 'स्वामी! कहते हैं कि कभी-कभार सपने पूर्वाभास के संकेतक होते हैं, पर आप घबराएँ नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है जब तक इस धरा पर आप जैसे मातृभक्त बेटे हैं, तब तक उनकी माई का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता है।'

कविता

आना

तनुजा चौबे

मैं धरा की तरह मजबूत हूं
आसमां की तरह झुक कर आना होगा।

स्थिर हो अपने वजूद को लेकर
मुझे इसी रूप में अपनाना होगा।

है धरोहर तुम्हारी चांद सितारों की
मैं धूल, तुम्हें टूट कर बिखर जाना होगा।

मेघा छाये या ना चमके बिजली
सावन बनाकर तुम्हें बरस जाना होगा।

भर लूंगी मैं भी आंचल रंग-बिरंगे फूलों से
मगर लौटने का वादा कर जाना होगा।

कथा

सुरेश सौरभ

आतंकी

''क्या नाम है तुम्हारा।''

''मनोज, पर वहाँ मुझे सब मुन्ना कहते थे।''

''आतंकवादियों के शिविर में कैसे पहुँचे।'

''उस रोज मैं स्कूल जा रहा था। दो लोगों ने मुझे रोक कर कहा कि उधर चलो बाल दिवस का मेला लगा है। आज बच्चों को मुफ्त में उपहार बाँटे जा रहे हैं-उपहारों के लालच और मेला देखने की उत्सुकता से मैं रोमांचित हो उठा और उनके साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर अभी चला ही था तभी अचानक एक कार आ गयी फिर उन्होंने जबरदस्ती मुझे पकड़ कर उसमें बिठा लिया, मैं चिल्लाता रहा, पर वहाँ मेरी चीख-पुकार सुनने वाला कोई न था-वे कार में बंदूक दिखाकर बोले-''ज्यादा चूँ-चपड़ की तो तेरा भेजा उड़ा दूँगा-मेरे हाथ-पाँव कस कर बांध दिए-मुँह पर टेप चिपका दिया-फिर कार के सड़ासड़.. सारे काले शीशे बंद कर लिए। कुछ समय बाद मैं उनके अड्डे पर पहुँचा-वहाँ का खौफनाक नजारा देखकर मैं विस्मित था।

''बेटे वहाँ का नजारा कैसा था, जरा विस्तार से बताओ।''

''चारों ओर बम गोलों कि पेटियाँ पड़ी थीं-तमाम मेरे जैसे बच्चे, तमाम आदमी कुछ औरतें गनमशीनें लिए कभी जाल पर चढ़ते, कभी उतरते, कभी लंबी कूद लगाते-कभी ऊँची कूद लगाते-चोट-चपेट भी खाकर वे रत्ती भर उफ न करते।''

''फिर क्या हुआ, उनका हुलिया कैसा था?''

''वे सब सैनिकों वाली वर्दी में थे, उन्होंने मुझे समझाया, ''हम जेहाद की लड़ाई लड़ रहे हैं-उसका प्रशिक्षण यहीं दिया जा रहा है। हमने अल्लाह की मर्जी से ईश्वर की इजाजत से यह जंग जारी की है। तुम हमारा सहयोग करो। हमारे इस पुण्य कार्य में भागीदारी बनो। अगर हम इस नेक काम में मर भी गये तो अल्लाह हमें जन्नत नसीब करेगा। अल्लाह के बताए मार्ग पर ही हम चल रहे हैं-यह हमारा फर्ज है-जितने ज्यादा लोग हमारे मिशन से जुड़ेंगे उतना ही शबाब हमें मिलेगा-इसलिए यह बंदूक पकड़ो-तुम्हारे सामने जैसे यह बच्चे जाल पर चढ़-उतर रहे हैं, ऐसे ही तुम भी अभ्यास करो।''

''मेरे मुँह का टेप छुटाया जा चुका था। हाथ पैरों की रस्सियाँ भी खोलीं जा चुकी थीं। आँखों से आग बरसते और चेहरे से खौफ बरसते उन आदमियों से मैं निर्भय होकर बोला,-''तुम्हारे अल्लाह को मैं नहीं जानता और न ही ईश्वर से पूर्ण परिचित हूँ, पर इतना जरूर जानता हूँ। अक्सर मेरी माँ कहती हैं-वादी में आतंकवादियों ने लोगों का जीना हराम कर रखा है-इन कातिलों का कोई धर्म नहीं, कोई ईमान नहीं-तुम वही कलंकी आतंकी हो। मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानूँगा।''

''फिर सड़ाक सड़ाक.... मुझे चमड़े की मोटी बेल्टों से खूब पीटा गया-मैं रोते-तड़पते अचेत हो गया-अंकल ये देखो निशान आज तक पड़े हैं।'' मनोज ने अपनी शर्ट की बटन खोल कर पीठ का यथार्थ प्रस्तुत किया-उसकी मासूम फूल सी देह पर पड़े कई स्याह देखकर सारे सैनिक हतप्रभ थे-घोर करुणा एवं दया से उनकीं आँखें पनीली हो गयीं।

''फिर क्या हुआ मनोज?'' एक सैनिक ने पुनः पड़ताल जारी की।'' ''उन्होंने मुझसे कहा-हम जो कहें उसे चुपचाप सीधी तरह मान लो। इसी में तुम्हारी भलाई है। वर्ना तुम्हारा खाना-पीना बंद-मरो भूखो और खाओ लात-घूसे-मैं अपनी जिद पर कब-तक अड़ा रहता-कब तक एक-एक बूँद पानी के लिए तरसता-आखिर कब तक? उनके लात घूसें खाता-मेरी नन्ही-नन्ही मोतियों की कीमत जानने वाला वहाँ कोई न था। दरिंदों की दुनिया में कोई दया का पुजारी न था और न ही कोई करुणा का भक्त।''

''आखिरकार मैंने विवश होकर हार मान ली। अपनी माँ की सारी नसीहतें भूल गया। फिर रोटी मिली और सूखते-तपते हलक को जल की जीवन धारा-फिर मैंने बंदूक उठाई, जाल पर चढ़ना-उतरना बंदूक चलाना और बम फेंकने जैसे तमाम दाँव पेंचों के प्रशिक्षण मेरे शुरू हुए। मैं चोटें खाता, उनकी गालियाँ खाता-उनकी पिटाई सहता, सब सीखता चला गया।''

जब मेरी ट्रेनिंग पूरी हो गयी-तब वे मुझे कश्मीर के भीड़-भाड़ वाले इलाकों में ले जाते। उनके निर्देशानुसार भीड़-भाड़ वाले इलाकों में मैं चुपके-चुपके बम रख आता। बच्चा होने की वजह से कोई मुझ पर शक न करता-फिर जोरदार धमाका होता-धड़ाम.... तमाम लोगों की लाशों के चिथड़े एक धमाके के साथ दूर-दूर तक बिखर जाते-बस कारों के परखच्चे उड़ जाते। सड़कें खून से सराबोर हो जातीं- लाशों के कई-कई ढेर लग जाते। चारों ओर हाहाकार मच जाता-चीत्कारों से आकाश गूंज उठता-धरती हिलने-डुलने लगती-लाखों करोड़ों का नुकसान सुन कर-चीत्कारों को सुन कर ये खूब जश्न मनाते। नेताओं के रास्तों पर बारुदी सुरंग बिछानी हो या रेल की पटरियाँ उड़ानी हो यह सब इनके लिए मामूली काम थे।''

''कभी तुमने उनके शिविर से भागने का प्रयास नहीं किया'', एक भारतीय सैनिक ने जिज्ञासा जाहिर की।

''कई बार प्रयास किया,पर हर बार कड़ी चौकसी के कारण मैं पकड़ा गया और फिर खूब पीटा भी गया।''

''और क्या होता था, उनके शिविरों में।''

''मोबाइल जैसे बड़े सेटों पर कभी पाकिस्तान से, कभी अफगानिस्तान से तमाम संदेश आते थे। उसको उड़ा, दो फलाँ का अपहरण कर लो, अपने साथी को छुड़ाने के लिए-जैसे हमारे साथियों ने कांधार में किया था।....जब हमने भारत सरकार को झुका दिया तो ये सैनिक और पुलिस क्या चीज हैं? बुतपरस्त हमारे धर्म के लिए हराम हैं? दुश्मन हैं? इन्हें पूरी तरह मिटाकर ही हमारी जेहाद की लड़ाई पूरी होगी-कोई चिन्ता न करो। तमाम गोला बारूद-तमाम पैसा भेजा जा रहा है... और आतंकी अपने मालिकों को हमेशा जंग जारी रखने का आश्वासन देते। कुछ बातें और भी हैं जिन्हें बताने में झिझक महसूस हो रही है।''

''बेटे सच्चाई कहने में कोई झिझक या संकोच नहीं करना चाहिए-जो बात हो साफ-साफ बताओ तुम्हारी एक-एक बात हमारे देश की सुरक्षा व्यावस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण है-बड़े साहब के दबाव के बाद मनोज ने कई रहस्यों से परदे उठाने शुरू किए ''अंकल जी दाढ़ी वाले कुछ लम्बे तगड़े आतंकी आधी-आधी रात को किसी बस्ती से जवान-जवान लड़कियाँ औरतें उठा लाते फिर वे न जाने क्यूँ उनके कैम्पों में रात भर रोती-चीखती रहती-सुबह तक रोना कलपना जारी रहता-फिर वे उन्हें उनकी बस्ती में फेंक आते, कोई चूँ तक न करता-कई बार तो कई औरतें के नग्न जिस्म को कद्दू मूली की तरह काट कर दूर पहाड़ियों-पर चील कौव्वों के लिए फेंक दिया जाता था-स्त्रियों पर पाशविक तांडव देखकर मुझे बड़ा दुःख होता। मैं हमेशा स्वयं को कोसता-आखिर कब तक लाचार बना रहूँगा- आखिर कब इन दानवों का तांडव देखता रहूँगा .....

''तुम कब से हो वहाँ तुम्हारी माँ बताती हैं-नौ वर्ष की आयु से तुम लापता हो-मेरे ख्याल से तुम्हारी इस समय आयु बारह वर्ष लगभग होगी। फिर इतनी कम आयु में इतने घातक प्रशिक्षण तुम कैसे सीख गये-बड़े आश्चर्य की बात है''-एक बड़े अधिकारी ने कहा।

''साहब आश्चर्य कैसा? इनके यहाँ का प्रशिक्षण ही ऐसा होता है कि नौ वर्ष क्या, पाँच वर्ष का बालक भी बंदूक चलाना,बम फेंकना सीख जायेगा। कश्मीर में ही नहीं बल्कि पूरे भारत में ये अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं। इस्लाम के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मों को ये तुच्छ समझते हैं, खतरा समझते हैं, अपने धर्म के लिए...आप ने अगर अचानक उनके शिविर पर छापा न मारा होता तो शायद मैं कभी आप को ये आतंकी कहानी न बता पाता-शायद मैं अपनी माँ से कभी न मिल पाता....फिर उसकी आवाज भर्राने लगी-फिर वह माँ से लिपट गया-उसकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा फूट पड़ी-वात्सल्य की अद्भुत सरिता से माँ का आँचल भीग गया और सारे सैनिकों का मन भी। फिर निःशब्दतः....एक शून्यता के उपरान्त मनोज बाल सुलभता में बोला-माँ वे लोग कह रहे थे, अल्लाह के हुक्म से जेहाद लड़ रहे है-भगवान के आदेश से रक्तपात कर रहे है क्या इसमें कुछ सच्चाई है?''

माँ विस्मित और सजल नेत्रों से बोली-''बेटे इसमें रत्ती भर सच्चाई नहीं है-कोई धर्म किसी निःसहाय,निर्बल-और निरपराध मानव की हत्या की अनुमति नहीं देता है। ये नरपिशाच हैं। दानव हैं, ईश्वर-अल्लाह की परिभाषा से पूर्ण अनिभिज्ञ हैं-दानवता मानवता से सदैव अपरिचित होती हैं।''

''साहब आप की पड़ताल पूरी हो गयी हो तो हम जाएँ।''-माँ ने बड़े साहब से विनम्रता से पूछा।

''हाँ आप लोग जा सकते हैं,अभी हम मुख्य आतंकवादियों को पकड़ने में कामयाब नहीं हो पाये हैं-मनोज को कहीं अकेले टहलने-घूमने मत देना, हम कुछ सुरक्षा कर्मी आप के घर पर तैनात किए दे रहे है।''-बड़े साहब बोले।

''नहीं साहब इसकी कोई आवश्यकता नहीं-हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर लेंगे-मुझे अपने साहसी पुत्र पर पूर्ण विश्वास है-बस मेरे बेटे को आप सेना में भर्ती कर सके तो... इतना कहना था कि मनोज बड़े साहब के आगे गिड़गिड़ने लगा-''साहब मुझे सेना में भर्ती कर लो। मैं सारे आतंकवादियों को चुन-चुन कर मार डालूँगा..

बड़े साहब बोले-''थोड़ी मुश्किल है,पर मैं.....अब तो मनोज जमीन पर लोट गया-रोते-गिड़गिड़ाते हुए बड़े साहब के पैरों के गिर्द, अजगर की मानिन्द बिन्ध गया। लिपट गया।

अब छापे के दौरान पकड़े गये अन्य बच्चों से पूछ-ताँछ शुरू हुई, उनकी पुतलियों में खौफ नाच रहा था। चेहरों पर चिन्ता और विषाद की घनघोर सिलवटें थीं। उनके अभिभावक भी डरे-सहमें दुबके खड़े थे।

माँ के आँचल की सघन-शीतल-ममत्वपूर्ण छाया से मनोज को स्वर्गीय आनंद की प्राप्ति हो रही थी-मनोज के आश्रुओं की सरिता माँ के आँचल में समा चुकी थी-अब वह अपने बिछड़े आश्रय पर पहुंचने को आतुर था-तात के गले में बाँहें डाल कर तोता-मैना राजा-रानी वाली खूब कहानियाँ सुनने को व्याकुल था। छोटे भाई-बहनों और मित्रों के साथ मिलकर धमा-चौकड़ी मचाने को अधीर था। आज मानो उसके पैरों में पंख लग गये थे। वह तेजी से भाग रहा था। माँ उसके पीछे-पीछे दौड़ी जा रही थी-मानो कोई चिड़िया अपने भूखे बच्चे को चुग्गा खिलाने को पीछे-पीछे भागी-दौड़ी जा रही हो, जैसे पनघट पर कई गाँव की गोरियों के अल्हड़ नुपूर रूनझुन-रूनझन बज उठे हो, जैसे सारी दिशायें, सारी फिजाएँ प्रेम-वत्सलता का मधुर कर्णप्रिय गान कर रही हो। जैसे पंजाब के छोरे-छोरियाँ नयी फसलें कटने पर उत्साह में, आवेग में, ढोल-ताशे की धुन पर, धमक पर थिरक रहे हो, कुछऐसी ही थापें मनोज के पैरों से पृथ्वी पर पड़ रही थीं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

परिस्थितियों से जूझते सुब्रमण्यम के भावयुक्त चित्र

हमारी कला को भी ऐसे ही आगे बढ़ना चाहिए अपने माँ-बाप पुरखों के जुड़ाव के साथ। कला में परिवर्तन होते रहना चाहिए और हो भी रहा है पर थाती सहेजते हुए। ऐसे कई कलाकार हैं जिनकी कला वैश्विक स्तर पर छाई हुई है और सराही भी गई है। उन्हीं में एक कलाकार है जिनके रंग-रेखा एक दूसरे से भिन्न राह पर चलते हुए भी अलग-अलग अपने अस्तित्व को सम्हाल कर चलने में सफल हुए है। रंगों का ऐसा उठा पटक वो भी गम्भीर और हल्के हर मुद्दों पर, रेखाओं के साथ और अलग दोनों दशाओं पर इनके पहले शायद ही कोई कलाकार किया हो और ये कलाकार हैं के जी सुब्रमण्यम जिनका जन्म केरल के एक पण्डित परिवार में हुआ। सुब्रमण्यम शुरु में मार्क्स और गाँधी के विचारों से प्रभावित हो आगे बढ़ते रहे परन्तु जेल में रहते हुए अपनों से धोखा खा चुकने के बाद उनका ऐसे परिस्थितियों से मोहभंग हो गया जहाँ सिर्फ और सिर्फ वादे थे जो समय आने पर धराशायी हो चुके थे, सुब्रमण्यम विचलित हो उठे परिणामतः उनके कदम कला की ओर उन्मुख हो उठे।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

इंसान परिस्थिति बस कहीं पर भी रहने को मजबूर रहे या सज्ज रहे पर मन जन्मस्थली में पहुँच जाने को तड़पता ही रहता है। माँ, माँ ही होती है उसका स्थान कोई दूसरा नहीं ले सकता। उसका आपके जीवन में होना तब समझ में आता है जब वो हमारे बीच नहीं होती। हमारी कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी कला को भी ऐसे ही आगे बढ़ना चाहिए अपने माँ-बाप पुरखों के जुड़ाव के साथ। कला में परिवर्तन होते रहना चाहिए और हो भी रहा है पर थाती सहेजते हुए। ऐसे कई कलाकार हैं जिनकी कला वैश्विक स्तर पर छाई हुई है और सराही भी गई है। उन्हीं में एक कलाकार है जिनके रंग-रेखा एक दूसरे से भिन्न राह पर चलते हुए भी अलग-अलग अपने अस्तित्व को सम्हाल कर चलने में सफल हुए है। रंगों का ऐसा उठा पटक वो भी गम्भीर और हल्के हर मुद्दों पर, रेखाओं के साथ और अलग दोनों दशाओं पर इनके पहले शायद ही कोई कलाकार किया हो और ये कलाकार हैं के जी सुब्रमण्यम जिनका जन्म केरल के एक पण्डित परिवार में हुआ। सुब्रमण्यम शुरु में मार्क्स और गाँधी के विचारों से प्रभावित हो आगे बढ़ते रहे परन्तु जेल में रहते हुए अपनों से धोखा खा चुकने के बाद उनका ऐसे परिस्थितियों से मोहभंग हो गया जहाँ सिर्फ और सिर्फ वादे थे जो समय आने पर धराशायी हो चुके थे, सुब्रमण्यम विचलित हो उठे परिणामतः उनके कदम कला की ओर उन्मुख हो उठे। उनके इस निर्णय के पीछे कुछ हद तक सुपरिचित भारतीय कला आलोचक आनन्द कुमार स्वामी के लेख भी थे जिसके सम्पर्क में ये अभी-अभी आये थे। सुब्रमण्यम प्रयोगधर्मी थे फिर चाहे वो कला के क्षेत्र में हो या जीवन के गूढ़ से गूढ़, विषम से विषम परिस्थितियों में, उनका प्रयोग जारी ही रहता। बड़े जद्दोजहद के बाद इनका दाखिला शान्तिनिकेतन में करवा दिया गया जहाँ नन्दलाल बोस, रामकिंकर बैज और बिनोद बिहारी मुख़र्जी सरीखे महान कलाकारों का सानिध्य मिलते ही इनके व्यक्तित्व और कला दोनों में निखार आ गया पर संघर्ष निरंतर जारी रहा, रंग रेखा और भावों के बीच लगातार ये द्वंद्व मय रहे।

सैर कर दुनिया के गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ, जिंदगानी गर रही तो नौजवानी.... इस विचार से भी शायद इनकी सहमति बराबर बनी रही इनके भ्रमण और यात्राओं का ही असर है कि इनकी कला शुरु से ही सीमाओं से परे की कला रही है। पंक्षी, नदियां, पवन के झोंके कोई सरहद ना इन्हें रोके गीत का काफी असर दिखाई पड़ता है सुब्रमण्यम के जीवन में। ये आजाद पंक्षी की तरह सदा ही विचरते रहते थे तभी इनकी कला, काल परिस्थिति सरहद यहाँ तक कि माध्यमों से परे की कला थी तभी तो रेखांकन चाहे चारकोल से हो या वैसे भी, में रंग अपने मौलिक रुप में प्रयोग में लाया गया है, वो भी चटख और सपाट बिना किसी लाग लपेट के। शांतिनिकेतन के हिंदी भवन में विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ म्यूरल बनाने या कहें सीखने का हल्का सा मौका क्या मिला म्यूरल में भी प्रयोग पे प्रयोग कर डाला गया इनके द्वारा जिसका प्रभाव लखनऊ के रविंद्रालय के बाहर लगभग 9 फिट ऊँचे टेराकोटिक म्युरल में देखा जा सकता है जिसकी लंबाई लगभग 81 फिट है या फिर दिल्ली के गाँधी दर्शन म्यूरल में भी। सुब्रमण्यम बड़े ही लगन के साथ अपने कलाकृतियों में रमें रहते थे और पढ़ने पर, समझने पर भी ध्यान ज्यादा था इसके साथ ही कला के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर भी इनकी अच्छी पकड़ थी। छात्रों को सिखाते समय भी हर बंधन से परे रखा इन्होंने ताकि बच्चे कला में कुछ अपना कर सकें। छात्रों से गम्भीर से गम्भीर मुद्दों पर बहस करना वो भी बिल्कुल ही सहज तरीके से इनके विद्वता की ही परिचायक थी।

अकबर पदमसी के शब्द अगर उधार लें कि 'बहुत मुस्कराना, जिसे हँसना कहते हैं वह सस्ता लगता है या कह सकते हैं मौन जहाँ है वहाँ ज्यादा सम्वेदना और गरिमा है' इनके चित्रों में भी हंसी जहाँ भी है हल्कापन ही महसूस कराती है साथ ही व्यंग्यता लिए है हास परिहास युक्त मुस्कान है जो एकबारगी अपने हल्केपन को खुद में समेटने का प्रयास भी करती है। इनकी अधिकतर कृतियाँ मौन हैं पर गम्भीर और संवेदनायुक्त हैं। मुखौटों की भी अधिकता है। चित्र 'अनइजी इन्टेरियस' जिसमें गहरे और हल्के भूरे रंगों का प्रयोग बीच-बीच में आड़ी तिरछी रेखाओं के मध्य सफेद, बैगनी और नीले रंगों का मुखौटे में समा जाना वो भी कुछ व्यग्र रेखाओं के साथ, रंगों का टूटते हुए क्रम में प्रयोग भी अस्थिरताओं को जगह देती है। नारंगी रंगों का प्रयोग भी दर्शनीय है। चित्र में स्पष्ट आकार ना होते हुए भी व्यग्रता स्पष्ट है जो इनके चित्रों की विशेषता है।

शुरुआती दौर में बंगाल शैली को इन्होने भी जीना शुरु किया था लेकिन जल्द ही अंदर की तड़प इन्हे इस मार्ग से विरत होने का आग्रह करने लगी और कुछ ही समय बाद इनके चित्रों में अपना अधिकार अपना स्ट्रोक, अपने विषय और अपनी शैली में दृष्टिगोचर होने लगे, माध्यम के साथ-साथ फलक पर प्रयोग भी जारी रहा फलतः कैनवस पर ही बंधे रहने की अपेक्षा प्लास्टिक सीट और एक्रेलिक सीटों पर भी काम करने का सिलसिला चल निकला। कहना गलत न होगा कि सुब्रमण्यम निर्मल जल की तरह बहते हुए अपनी कला यात्रा की है। रास्ते में जो भी रंग, गुण, पदार्थ मिलता गया अपने में आत्मसात करते गये पर अपने जल होने के अस्तित्व के साथ, तभी तो स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट, लंदन जहाँ 1955-56 में जाने के मौके के बाद लगभग 57 से लेकर 61 तक हैन्डलूम बोर्ड मुंबई में बिताने के बाद इनके चित्रों में सामाजिक मिथकों का भी समन्यव रुप दिखाई पड़ने लगता है और बच्चों के खिलौने जो इन्होंने खेल-खेल में बनाए होंगे एक बार फिर से बालपन को समझने के मौके को हथिया लिया इसी बहाने। बच्चों के लिए इलेस्ट्रेशन बनाए कहानियाँ भी लिखी इन्होंने। मध्ययुगीन लघु चित्रण, पत्थर गुफाओं में अंकित जनजातीय भित्ति चित्रण से रंग-रेखाओं को उसी अंदाज में कुछ चटकता के साथ उठाना, लोक कलाओं को चारकोल और चटख रंगों में पिरो देना, टेक्सटाइल स्टाइल को नये अंदाज़ में अपने चित्रों में समाहित कर लेना एक नये सिद्धांत के जनक तो आप खुद ही हो गये हैं लेकिन पूर्व के कुछ विद्वान जो आपके चित्रों में इन सभी विशेषताओं के साथ ही यह भी मानते हैं कि भारतीय शिल्प के साथ पाश्चात्य के विविध सिद्धांत आपके कला में समायोजित है को मैं भी मान लेता हूँ पर मज़े की बात यह है कि अंतर्मन मानने को तैयार नही हैं। आपके विषय भी अपने और सिद्धांत भी अपने ही हैं आपकी यात्राएँ ही आपके विचारों आपके नजरियें में सागर सी अथाह गहराई के कारण हैं। इनकी अधिकतर कृतियाँ अशीर्षक ही रही हैं मतलब साफ है कि ये दर्शक को भी अपने स्तर पर सोचने को स्वतंत्र छोड़ देते थे बंधन और सीमाओं से परे। रक्तिम आँखों के बीच हरी-हरी पुतलियां नष्ट हो चुके परिवेश में भी उम्मीद की किरण साबित हुई हैं। स्त्री पुरुष विनोद में भी व्यंग्य साफ झलकता है। कठपुतली जैसे चेहरों से भी भाव झलक रहा है। ब्रश स्ट्रोक लगभग हर कमियों पर भारी है। इनके अधिकतर चित्र परिप्रेक्ष्य विहीन से लगते हैं पर भाव और खूबसूरती में कहीं से भी बट्टा नहीं लगता। और अंत में उनके ही शब्दों में कहें तो चित्रकृति ऐसी हो जो गूँजती रहे। स्मृति में बनी रहे। इस आशा के साथ कि सुब्रमण्यम की कलाकृतियाँ भी सभी के ज़ेहन में सदा बसी रहेंगी। आज जबकि वो हमारे बीच नही हैं अपने कृतियों के साथ हमारे और आपके बीच रहेंगे। कलाकृति साभार गूगल से है।

रचनात्मक करने-सोचने के लिए विवश करते व्यंग्य

पुस्तक समीक्षा

रमेशचंद्र पंत

समीक्षक

साहित्य की गुमटी' प्रसिद्ध कवि एवं व्यंग्यकार धर्मपाल महेंद्र जैन का समय एवं समाज में व्याप्त विरूपताओं को प्रश्नांकित करने का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है। इस संग्रह-विशेष में कुल 48 व्यंग्य-आलेख सम्मिलित हैं। विषय-वैविध्यता की दृष्टि से संग्रह पठनीय एवं विशिष्ट है। 'रेवड़ी बाँटने वाले मालामाल' राजनीति में इन दिनों व्याप्त धूर्तताओं का कच्चा-चिट्ठा है। राजनीतिज्ञ किस तरह जनता में रेवड़ी बांटकर स्वयं अकूत संपत्ति अर्जित कर रहे हैं, इसी का रेखांकन है। 'बम्पर घोषणाओं के जमाने में' राजनेताओं द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए समय-समय पर की जाने वाली निरर्थक घोषणाओं को प्रश्नांकित किया गया है। 'सरकार बनेगी तो कचरा हटेगा' में दिल्ली में कचरे को लेकर जो राजनीति की जाती रही है, उस पर सटीक व्यंग्य है। 'ईडी है तो प्रजातंत्र स्थिर है' व्यंग्य में भी कहीं-न-कहीं राजनैतिक चरित्र पर सवालिया दृष्टि डाली गई है।

'हर जिले में विधान सभा बनाएंगे' में भी निजी स्वार्थों के लिए किस हद तक वैचारिक शून्यता हो गई है, उसी का सम्यक अंकन है। 'भांग की खुमारी में मंत्री जी' में सटीक व्यंग्य देखिए, 'राजनेताओं को राजनीति करने दें वे मजबूत होंगे तो दंगे-फसाद-आंदोलन करवाएंगे। उनके अपरोक्ष हिंसा भड़काने से अंततोगत्वा कुछ लोग मरेंगे और देश कुछ मजबूत होगा।' 'जहां राजनेता उगते हैं वो देश है मेरा' व्यंग्य आलेख में भी देखिए, 'देश की मिट्टी है ही ऐसी सुजलाम-सुफलाम कि बिना खाद, बिना पानी, बिना बीज के राजनेता उग आते हैं। वे उगते ही प्रदूषित हवा और नदी-नालों में सड़ रहे पानी में संघर्ष करते हैं और पनप जाते हैं। पनपते हैं तो छा जाते हैं।' 'प्रजातंत्र की अंगूठी' में भी राजनीति के गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त की गई है। 'बजट की ढपली और छुटभैया राग में' बजट को लेकर देखिए, 'कोई भी बजट हो वह गरीबी हटाता ही है। बस, गरीबी किसकी हटेगी यह कोई नहीं समझ पाता। यदि आप आम आदमी हैं तो बजट से परेशान न हों, जो सबका हश्र होगा वही आपका होगा। 'कुर्सी एक चांदीलाल अनेक', 'चिपको और जेब भरो', 'साहब को जुकाम है पर...', सरकार तुम ट्रिलियन हम पाई' में भी राजनैतिक विसंगतियों पर प्रहार किया गया है। सच तो यह है कि राजनीति में व्याप्त असंगतियां सभी व्यंग्यकारों के लिए लेखन का उनका प्रिय विषय रही हैं।

इन दिनों हर कोई बिना नागा व्हाट्सएप एवं फेसबुक पर जीमने में लगा है। 'वॉट्सएप नहीं भाट्सऐप' व्यंग्य आलेख में व्यंग्य की धार देखिए, 'रात के बारह बज गए हैं। निशाचरों के रचनात्मक लेखन का समय हो गया है। सारा देश जब सो रहा हो तब साहित्यकारों और उल्लुओं को अपना कर्तव्य निबाहना होता है।'

'लाइक बटोरो और कमाओ' में फेसबुक पर लोग इतने एडिक्ट हो गए हैं कि लाइक और कमेंट जैसे उनके जीवन का सार बन गया है। व्यंग्यकार की दृष्टि में, 'जिंदा हो तो फेसबुक पर दिखा करो। मेरी टाइमलाइन पर एक मिनट वीडियो देखो और कमेंट करो तो मुझे मालूम पड़े कि अपना बंदा जिंदा है।' 'आज के भक्तिकाल में' साहित्यकार प्रसिद्धि की कामना में क्या-कुछ रचने-बुनने लगता है, उसका रोचक वर्णन- 'अल्प समय में ही वे विधायकजी इक्कीसा, सांसदजी चालीसा, मुख्यमंत्रीजी शतक लिखकर छा गए। जिन पार्षदों पर उन्होंने दो लाइनें लिखी थीं, वे अब पूरा पेज लिखवा सकने वाले चेयरमैन बन गए थे। कविता का समकाल उनके प्रशस्ति काव्य से गुलजार था। वे इक्कीसवीं सदी के भक्तिकाल के मुख्य कवियों की पंगत में थे।'

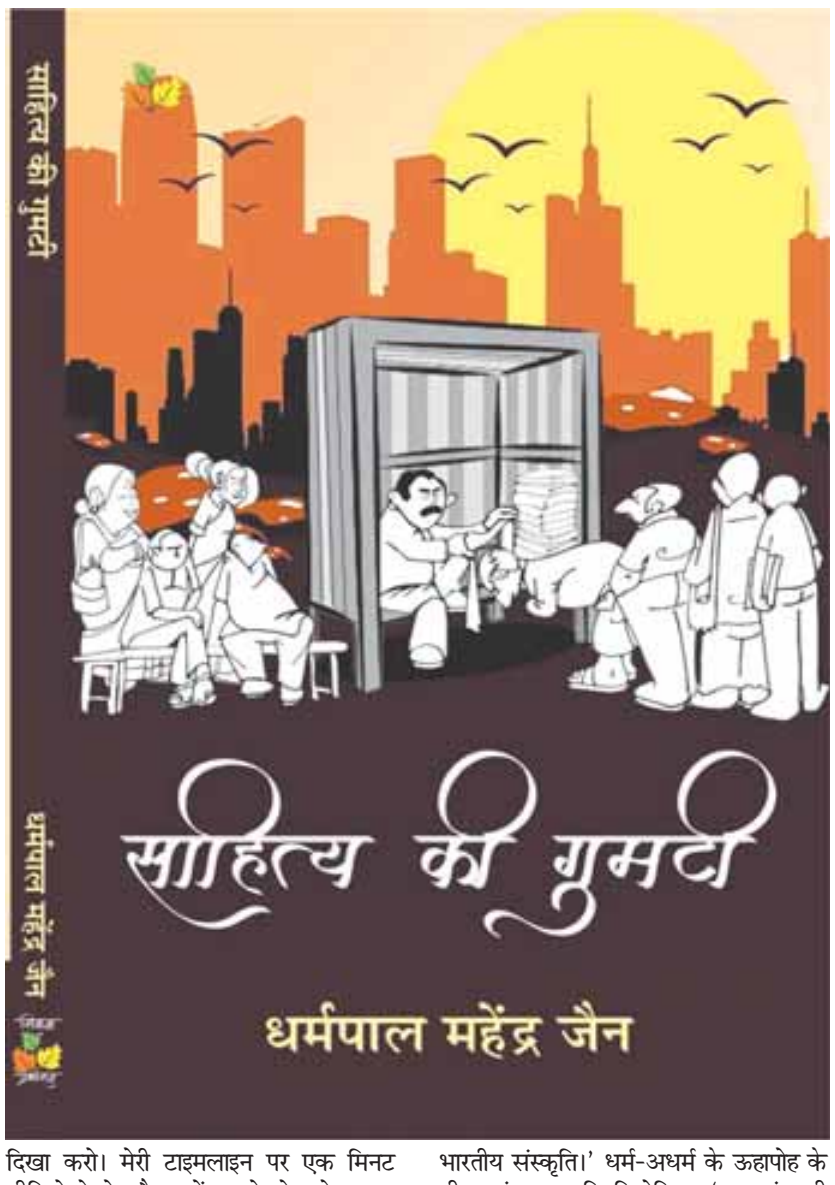

'संस्कृति संक्रामक बीमारी है' में छात्र, अध्यापक, प्रोफेसर, वकील, थानेदार, बाबू, सेक्रेटरी, राज्यमंत्री, नेता प्रतिपक्ष, जनवादी लेखक, दुकानदार, संपादक, चुनावी रणनीतिकार, डॉक्टर, पशु चिकित्सक, प्रवासी साहित्यकार एवं किसान सभी अपने-अपने कोण से संस्कृति की व्याख्या करते हैं। 'संस्कृति ढंक कर रखने की चीज है' में व्यंग्य- 'उनके लिए भारतीय संस्कृति अजायबघर या किसी कोने में पड़े कचरे से उठाई गई चीज है। हमें इस संस्कृति के बलबूते पर दुनिया में झंडा गाड़ना है। भला मैं उन्हें कैसे खोलकर बता दूं भारतीय संस्कृति।' धर्म-अधर्म के ऊहापोह के बीच व्यंग्यात्मक स्थिति देखिए- 'नाम संस्कारी हो तो जूते खाओ' में- 'सोचता हूं अपना नाम बदल कर अधर्म कर लूं। यह इक्कीसवीं सदी का प्रतिनिधि शब्द है। इस पर सनातनी या तनातनी होने की संभावना भी नहीं है। गलत काम करके भगवान को प्रसाद चढ़ाने से डंके की चोट पर सुरक्षा का आशीर्वाद मिल जाता है।' 'धर्म रक्षक सदाचारी' में व्यंग्य, 'सदाचारी ने खुद को समझाया- धर्म की रक्षा के लिए की गई हत्या पाप नहीं होती। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है, धर्मो रक्षति रक्षितः।'

संग्रह में सम्मिलित अन्य सभी व्यंग्य-आलेख भी समय एवं समाज में व्याप्त विरूपताओं के ही रेखांकन हैं। वैयक्तिक आचरण एवं व्यवहार के साथ-साथ इस समय जो संस्थागत विचलन दिखाई दे रहा है, व्यंग्यकार ने उन सभी पर सटीक लेखनी चलाई है। सभी व्यंग्य-आलेख हमें कहीं भीतर तक कुछ-न-कुछ रचनात्मक करने-सोचने के लिए विवश करते हैं।

पुस्तक : साहित्य की गुमटी (व्यंग्य संग्रह)
लेखक : धर्मपाल महेन्द्र जैन
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सीहोर
मूल्य : रू. 275

खौफ़ : समाज के लिये आईना एक साइको थ्रिलर

वेब सीरिज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

स्त्री को भोग्या मानने की मानसिकता वाले पुरुषों की लालसा को लेकर बुनी गई वेबसिरीज़ -'खौफ' को हम हॉरर सिरीज़ की संज्ञा देकर उसके साथ न्याय नहीं कर पायेंगे । इस सिरीज़ को यदि हम ज़ोनर के खाते में दर्ज करना चाहें तो उस एक हॉरर सिरीज़ नहीं साइको थ्रिलर कहना उपयुक्त रहेगा । इस वेबसिरीज़ में समाज के उस दर्जे के लोगों की मानसिकता को दिखाया गया है, जो नौकरी करने वाली महिलाओं को गलत नजरिए से देखते हैं। पिछले कुछ सालों से भारतीय सिनेमा में हॉरर फिल्में बनने का चलन काफी बढ़ गया है, लेकिन अगर उसमें साइको थ्रिलर का छौंक भी लगा दिया जाये तो आस्वाद के स्तर पर बढ़ोत्तरी स्वाभाविक ही कहीं जायेगी और -'खौफ़' में आपको यह देखने को मिलेगा। इस सिरीज़ के साथ कुछ ऐसा हुआ है कि कहने को ये हॉरर बेस्ड है, मगर इसमें अलग-अलग मुद्दे दिखाए गये हैं। यह समाज के लिए आईना भी है और उन लोगों के लिए सबक भी जो या तो बहुत ज्यादा अंधविश्वास में जीते हैं या इन सब बातों को बिल्कुल नहीं मानते और कहते है भूत प्रेत जैसा कुछ होता ही नहीं और महिलाओं को अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए या कुछ गलत हो जाए तो उन्हीं की गलती होगी, ऐसा सोचने वालों को यह वेबसिरीज जरूर देखनी चाहिए। 'खौफ' में महत्वाकांक्षी औरतों की कहानी दिखाई गई है, जो अपने घर से दूर एक हॉस्टल में रहने आती हैं और एक गलती के कारण वहाँ कैद होकर रह जाती हैं।

सिरीज की कहानी केन्द्रित है मधु नाम की एक लड़की के आसपास (इस भूमिका को मोनिका पंवार ने निभाया है)। वह ग्वालियर से दिल्ली नौकरी के लिए आती है और शहर से हटके एक होस्टल में रहने लगती है। उसके कमरे का नंबर 333 है और इसे एक भूतिया कमरा कहा जाता है। उसके आसपास के कमरों में रह रही लड़कियां पहले उसे वहाँ रहने के लिए मना करती हैं, लेकिन वो उनकी बात नहीं सुनती, जब तक उसे खुद वहाँ किसी बुरी आत्मा के होने का अनुभव नहीं हो जाता। मधु का अतीत काफी डरावना है और दिल्ली आकर उसके पुराने घाव फिर से हरे होने लगते हैं, साथ ही वो अपने साथ हो रही अजीबोगरीब चीजों से भी परेशान है। वहीं दिल्ली के एक पुराने इलाके में एक हकीम रहता है, यह भूमिका रजत कपूर ने निभाई है, उससे मदद माँगती है। कई मोड़ और घटना -दुर्घटना के बाद एक सस्पेंस पर आकर सिरीज थमती है गोया खौफ़ का सीक्वल भी आ सकता है ।

आठ एपीसोड की यह वेबसिरीज लगभग छह घण्टे में पूरी होती है । इसका हर एपीसोड लगभग 45 मिनट का है। इस सिरीज़ का विषय काफी सोच समझकर लिया गया है, मगर कहानी काफी धीमी लग सकती है। निर्देशन की बात करें तो इस सिरीज़ को खौफनाक बनाने के लिए कई जगह अंधेरे वाले सीन दिखाए गए हैं, लेकिन वो इतने डार्क है कि उस बीच आपको एक्टर्स के चेहरे भी नहीं दिखेंगे। कई सीन

जंगल में शूट किए गए हैं और ये सिर्फ डायलॉग सुनकर ही पता चलता है, सीन में ठीक ढंग से कुछ भी दिखाई नहीं देता है।

इस सिरीज में दिखाया गया है कि जितना लोग भूत से डरते हैं उससे कहीं ज्यादा डरावने कुछ आदमी होते हैं जो महिलाओं को अपना शिकार बनाते हैं। लेखिका स्मिता सिंह ने इस सिरीज में दिल्ली में वर्ष 2012 में हुए निर्भया काण्ड का जिक्र भी किया है और दिखाया है कि महिलाओं को लेकर दरिंदे कैसी सोच रखते हैं। जो महिला नौकरी कर रही है और देर रात अपने घर लौटती है उसे ये सिरीज़ जरूर देखनी चाहिए। हमारे देश में महिलाओं के अधिकार और उनकी सुरक्षा को लेकर कई तरह की बातें की जाती हैं, लेकिन क्या वाकई समाज में महिलाएं सुरक्षित हैं? इसकी कहानी को बताया गया है अमेजन प्राइम पर आई इस वेबसिरीज में। कहने को तो ये एक हॉरर वेबसिरीज है, जिसमें सुपर नेचुरल चीजों के बारे में दिखाया गया है, मगर दूसरा पहलू कुछ और है और वह है महिलाओं की सुरक्षा की तज़वीज़ ,शायद इस वेबसिरीज़ में उसे ही दर्शाने की कोशिश की गई है ।

कविता

वैशाख, तुम्हारा आना

कारुलाल जमड़ा 'कारुण्य'

वैशाख !
तुम्हारा आना
कर देता है भाव-विभोर
क्योंकि तुम लाते हो
वैवाहिक वर्षगांठ
माँ-पिता सहित सहस्त्रों की।

तुम्हारे आते ही
याद आ जाती है
पीले घड़े पर उत्कीर्ण संवत 2022 की द्वितीया और माँ की कथाएं।

माँ ने कहा था
कि इसी दिन वह ब्याही थी
पिताजी के साथ
फिर वर्षों बाद मैंने इसका जिक्र देखा था उस घड़े पर।

तुम्हारे आने के बाद
आती है याद
खलिहान से आने वाले अनाज की
और दिखाई पड़ते हैं मेरे माँ और पिता
सर पे पोटला लादे घर की ओर आते हुए।

तुम्हारे आने से
लौट आते हैं बचपन के संघर्ष
माँ-बाप के मेहनती चेहरे
और अनाज आने की खुशी में खिलखिलाते
हम भाई-बहन के स्मरण !

बदला मौसम का मिजाज, बादल छाने से लुढ़का तापमान

बैतूल। बैतूल में तेज गर्मी के बीच मौसम ने अचानक करवट ली है। आसमान पर बादल छाने से तापमान में गिरावट दर्ज की गई है। इस बीच मौसम विभाग ने बारिश की संभावना जताई है। इससे बढ़ते तापमान से राहत मिलने की उम्मीद है। हालांकि सूरज की लुका छिपी से तापमान में उतार चढ़ाव का दौर जारी है। मौसम विभाग ने बैतूल और उसके पड़ोसी नर्मदापुरम, पांढुरना, छिंदवाड़ा समेत 20 जिलों में बारिश होने की संभावना जताई है। आने वाले 3 दिनों में भी बारिश की संभावना जताई गई है। लेकिन आसमान पर बादल छाने के बाद इसके तुरंत ही छंट जाने से फिर गर्मी का कहर बढ़ गया है। शुक्रवार को तापमान 40 पार होकर 40.8 डिग्री पर पहुंच गया था। लेकिन शनिवार को आसमान पर आंशिक बादल छाने से तापमान में हल्की गिरावट दर्ज हुई है। शनिवार का तापमान 38 डिग्री के आसपास बना हुआ है। बता दे कि इस सप्ताह में 23 अप्रैल को सर्वाधिक 41.4 डिग्री सेल्सियस तापमान था, जो इस सीजन में अब तक का सर्वाधिक तापमान है। जिले में 18 अप्रैल को अधिकतम तापमान 39.7 डिग्री सेल्सियस था। 19 अप्रैल को तापमान बढ़कर 40.5 डिग्री सेल्सियस हो गया। इसके बाद से अधिकतम तापमान में आधा और एक डिग्री की बढ़ोतरी हुई है।

पेंशनर संघ 60 प्लस लालबाग ग्रुप की संवेदनशील पहल, पक्षियों की प्यास बुझाने टांगें सकोरे

धार। पेंशनर संघ 60 प्लस लालबाग ग्रुप के सानिध्य में वरिष्ठजनों ने पक्षियों को गर्मी से राहत दिलाने एवं उनकी प्यास बुझाने के लिए शहर के लालबाग में सकोरे टांगें व नियमित पानी भरने की

व्यवस्था सभी वरिष्ठजन करेंगे। इस अवसर पर अध्यक्ष कैलाशचंद्र मालवीया, कुंठे जी, वर्मा जी, राठौर जी, महेश महेश्वरी , डांगी जी, नारायण कुबेर जोशी, चौधरी जी, मोहनलाल जोशी, गोयल जी, दामोदर जी, बैरागी जी सहित वरिष्ठजन उपस्थित थे।

गर्मी की तपिश से पक्षियों को राहत के लिए लालबाग में सकोरे टांगें, पानी की व्यवस्था भी करेंगे सीनियर सिटीजन- प्रचंड गर्मी से नागरिक ही नही वरन् पक्षी भी परेशान है। गर्मियों में पक्षियों को शीतलता और उनकी प्यास बुझाने के लिए पेंशनर संघ 60 प्लस लालबाग ग्रुप द्वारा सराहनीय पहल करते हुए गर्मी की तपिश से पक्षियों को राहत के लिए लालबाग में सकोरे टांगें, पानी की व्यवस्था भी सीनियर सिटीजन करेंगे। वरिष्ठजनों की इस संवेदनशील पहल की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

धार नगर में सेन जी महाराज की 725 जयंती धूमधाम से मनाई गई, निकला जुलूस

धार। मालवी गुजराती सेन समाज धार के तत्वाधान में आज धार नगर में सेन जी महाराज की 725 जयंती धूमधाम से मनाई गई।

नगर के प्रमुख मार्गो से जुलूस निकाला गया जिसमें सेन जी महाराज की झांकी आकर्षण का केंद्र रही। जुलूस में बड़ी संख्या में धार सेन समाज के महिला पुरुष युवक एवं युवतियां शामिल हुए।

जुलूस सेन धर्मशाला नानेवाडी धार से प्रारंभ होकर सांइधाम गार्डन पर सेन जी महाराज की आरती एवं भोजन प्रसादी के बाद संपन्न हुआ। हजारों लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में धार नगर के सामाजिक सद्भावना मंच से सभी समाज के प्रमुखों ने भी उपस्थिति दर्ज कराई। मालवी गुजराती सेन समाज धार ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गुजराती सेन समाज धार के अध्यक्ष नरेंद्र सिसोदिया, मालवी गुजराती सेन समाज धार के अध्यक्ष योगेश भाटी, महेश राठौर, राकेश परमार, जगदीश भाटी, शिवनारायण आर्य, मनोहर लाल परमार, सेन समाज नवयुवक मंडल के सदस्य शामिल हुए।

पहलगाम शहीदों को दी श्रद्धांजलि

सोहागपुर। पहलगाम नरसंहार को लेकर सोहागपुर ही नहीं आस-पास के कस्बों में भी आतंकवादी को लेकर आक्रोश व्याप्त है। ग्राम शोभापुर आतंकवाद के खिलाफ समस्त नागरिकों ने एक जुटता का परिचय देकर जबरदस्त प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में भारी जनसमुदाय शामिल रहा।इधर समीपवर्ती ग्राम सेमरी हरचंद में भी आतंकवाद के विरुद्ध में जमकर नारेबाजी करते हुए आतंकवाद का पुतला दहन किया। वहीं सोहागपुर में कुशवाहा मौर्य क्षत्रिय समाज संगठन ने पहलगाम नरसंहार मे शहीद हुए नागरिकों के लिए श्रद्धांजलि सभा की । जिसमें पाकिस्तान की भर्त्सना करते हुए मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।इस अवसर पर कुशवाहा मौर्य क्षत्रिय समाज संगठन के वरिष्ठ संरक्षक गोपाल शंकर कुशवाहा मास्टर सहाब , संभागीय संयोजक नर्मदाप्रसाद कुशवाहा, संभागीय उपाध्यक्ष अशोक कुशवाहा, जिला उपाध्यक्ष सुरेन्द्र पटेल, जिला सचिव राजेश मौर्य, युवा साथी, हर्ष मौर्य, यश मौर्य, आस्तिक वेलवंशी उपस्थित थे।

41 डिग्री के आसपास पहुंचा तापमान, प्याऊ के मटके भी दो टाइम ही हो रहे रिफिल

ठंड तर करने परेशान लोग, यात्री भी पानी खरीदकर बुझा रहे प्यास

(फाइल फोटो)

बैतूल। गर्मी ने अपने तेवर दिखाना शुरू कर दिया है और अभी शादियों का सीजन भी शुरू हो गया है। जिसके चलते बाजार में खरीदारी करने के लिए लोगों की भीड़ लगनी शुरू हो गई है। ऐसे में लोगों को अपने कंठ तर करने के लिए परेशान होना पड़ रहा है। यह जरूर है कि नगरपालिका ने सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक प्याऊ की शुरुआत की है, लेकिन प्याऊ पर रखे मटको को सिर्फ दो ही बार भरा जा रहा है। वहीं मटको की संख्या भी कम है। जिससे यह मटके भी चंद घंटो में ही खाली हो जाते है। परिणाम आमजनता को ठंडे पानी के लिए यहां-वहां परेशान होना पड़ता है, या पानी की बोतल खरीदकर पीना पड़ रहा है। ज्यादा परेशानी शहर के गंज और कोठी बाजार बस स्टैंड पर है। ठंडे पानी की व्यवस्था नहीं होने से लोगों को 20 रुपए बोतल में पानी खरीदना पड़ रहा है। रोजाना लगभग 1 हजार पानी की बोतलें बस स्टैंड के आसपास से बिक रही हैं। दरअसल कोठी बाजार बस स्टैंड पर जो वाटर कूलर लगा है, उससे ठंडा पानी नहीं मिल पा रहा है। इसीलिए कंठ तर करने लोग ठंडे पानी की बोतल खरीद रहे हैं, वहीं गंज बस स्टैंड पर तो पीने के पानी के इंतजाम ही नहीं हैं, यहां का एकमात्र हैंडपंप खराब पड़ा है।

रोजाना हजारों यात्रियों का आना-जाना - बस स्टैंड पर रोजाना सैकड़ों बसों और हजारों यात्रियों का आना-जाना लगा रहता है। लेकिन यहां यात्रियों के लिए मूलभूत सुविधाएं तक नहीं है। अधिकांश यात्री बस स्टैंड के बाहर खड़े रहते है। गंज बस स्टैंड पर धूप से बचने तक के इंतजाम नहीं है, एक छोटा शेड है। जहां यात्री खड़े होकर बसों का इंतजार करते है या धूप से बचने के लिए दुकानों के शेड का सहारा लेते है। वहीं कोठीबाजार बस स्टैंड पर पीने के पानी के अलावा अन्य सुविधाओं का भी अभाव है। यात्रियों का कहना है कि बस स्टैंड पर ठंडे पीने के पानी की व्यवस्था अनिवार्य है। नपा से बस स्टैंड पर ठंड पीने के पानी की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि लोगों को पानी के लिए यहां-वहां परेशान न होना पड़े।

सिर्फ दो बार रिफिल हो रहे प्याऊ के मटके - शहर में नपा सहित संगठनों द्वारा संचालित करीब 24 प्याऊ है। इन प्याऊ पर मटके रखे हुए है, जिन्हें नगरपालिका द्वारा भरा (रिफिल) किया जाता है। लेकिन इस काम में भी नपा की लापरवाही सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि नगरपालिका द्वारा गंज, कोठीबाजार सहित अन्य सार्वजनिक स्थानों पर शुरू किये गये प्याऊ के मटको की रिफिलिंग दो बार ही करवाई जा रही है। ऐसे में भीड़ वाले क्षेत्र में यह मटके चंद घंटो में ही खाली हो जाते है। ऐसे में लोग प्याऊ तक तो पहुंचते है, लेकिन उन्हें ठंडा पानी नहीं मिल पाता है। ज्यादा परेशानी कामकाज के लिए भरी दोपहरी में निकलने वाले लोगों को होती है, जिन्हें ठंडे पानी के लिए भटकना पड़ रहा है।

ठंडे पानी का एटीएम नहीं कर रहा काम

नगरपालिका का कहना है कि कोठी बाजार बस स्टैंड पर ठंडे पानी के लिए एटीएम मशीन लगाई है, लेकिन मशीन खराब होने की वजह से यह काम नहीं कर रही है। नपा अधिकारियों का कहना है कि यहां असामाजिक तत्वों द्वारा एटीएम मशीन को नुकसान पहुंचाकर खराब कर दिया गया है। बस स्टैंड पर प्याऊ लगाया है, जहां मटकों में दो बार पानी भरा जाता है। बता दे कि शहर का तापमान 41 डिग्री सेल्सियस के आसपास है। ऐसे में प्याऊ के मटके जल्द ही खाली हो जातें है। शहर के नागरिक का कहना है कि गर्मी ने अपना दस्तक देना शुरु कर दिया था। ऐसे में नगरपालिका को शहर के व्यस्ततम क्षेत्रों में वाटर कूलर लगाने की पहल करनी चाहिए। ज्यादातर ऐसे स्थानों पर वॉटर कूलर अनिवार्य है, जहां हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती है।

इनका कहना है -

शहर में करीब 24 सार्वजनिक प्याऊ है। जिनके मटके दो बार भरे जाते है। भीड़ वाली जगहों पर यदि मटके जल्दी खाली हो रहे है तो तीन बार मटकों में पानी भरवाने की व्यवस्था करेंगे। बस स्टैंड पर लगी पानी की एटीएम मशीन असामाजिक तत्वों द्वारा खराब कर दी है। इसे भी जल्द ठीक करवाने का प्रयास किया जायेगा।

- नीरज धुर्वे,
एई, नगरपालिका बैतूल

पानी ईश्वर का अनमोल उपहार शहरवासी सहेजें और सहयोग भी करें : नपा अधिकारी

नगर पालिका में बैठकों का दौर, नपा अध्यक्ष साइकिल से देंगे संदेश

बैतूल/आमला। हम पानी बना नहीं सकते लेकिन बचा जरूर सकते हैं, पानी ईश्वर का हमें दिया गया एक अनमोल उपहार है, और इस समय समूचे शहर और आसपास के इलाकों में भूजल स्तर गिरने से शहर के लिए यह मुश्किल भरे दिन है इसलिए शहर वासियों से सहयोग की अपील की जा रही है, उक्त वक्तव्य नगर पालिका अधिकारी वीरेंद्र तिवारी ने शनिवार को नगर पालिका में एक

अनौपचारिक बैठक में कहे हैं।

दरअसल बीते कुछ समय से इलाके में गिरते भूजल स्तर से अचानक पानी के संकट का दौर शुरू हो गया है, ऐसे में नगर पालिका ने तत्काल आदेश से शहर में एक दिन के अंतराल से मिलने वाली पेयजल व्यवस्था को दो दिन के अंतराल से लागू कर दिया है।शहर में बेहतर व्यवस्था के लिए लगातार बैठके भी की जा रही है। इसके लिए वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर शहर में कुछ पेयजल स्रोतों का अधिग्रहण भी किया गया है,कुछकी तलाश जारी है। जैसा कि नगर पालिका अधिकारियों ने हमें बताया है कि अगले सप्ताह लगभग 10 बोर भी किया जा रहे हैं उम्मीद है नगर पालिका के इन प्रयासों से आगामी भीषण गर्मी का दौर बेहतर ढंग से गुजर जाएगा। शनिवार नगर पालिका में जल संकट पर रखी अनौपचारिक बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाड़रे उपाध्यक्ष किशोर माथनकर, पार्षद राकेश शर्मा उपयंत्री मनोज अग्रवाल, सुभाष शर्मा, अरुण पवार, गणेश भी शामिल हुए।

जलावर्धन कंपनी की वादाखिलाफी से बिगड़े हालात- दरअसल लगभग 10 वर्ष पूर्व पूरे शहर को 24 घंटे पेयजल उपलब्ध हो सके इसके लिए सरकार द्वारा लगभग 30 करोड़ की लागत से लालवाड़ी पेयजल आवर्धन योजना शुरू की गई थी, किंतु जिम्मेदारों की अदूरदर्शिता और अनाड़ीपन का परिणाम ये हुआ कि शहर से सटे लालावाड़ी में जहां वर्ष भर 24 घंटे शहर की पेयजल आपूर्ति का सपना दिखाकर जो जलाशय बनाया गया था, वो शहर के लिए किसी बुरे ख्वाब सा साबित हुआ है,और जलाशय बनाने वाली महाराष्ट्र की महालक्ष्मी कंस्ट्रक्शन कंपनी गधे के सर से सींग की तरह अब गायब हो चुकी है, और जलावर्धन कंपनी की इसी वादाखिलाफी से शहर में पेयजल संकट के हालात भी बने हैं। किंतु अब शहर में बिगड़े हालात के बाद नगर पालिका के जिम्मेदार व्यवस्था बनाने का दावा जरूर कर रहे हैं।

नपा अध्यक्ष साइकिल से देंगे संदेश- इधर नगर पालिका अध्यक्ष ने पूरे शहर को संदेश देने के लिए एक अनूठा तरीका अपनाया है, दरअसल नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाडरे अब शहर में साइकिल से चलेंगे, चाहे नगरपालिका आना हो या फिर आम लोगों से मिलने जाना हो, नगर पालिका अध्यक्ष अब साइकिल का ही इस्तेमाल करेंगे जैसा कि नगर पालिका अध्यक्ष ने हमें बताया है कि इसका मुख्य उद्देश्य ईंधन की बचत करना तो है ही इसके अलावा वर्तमान में बने जल संकट के इस दौर में वह साइकिल से घर-घर जाकर पेयजल बचाने की अपील भी करेंगे, जिससे लोगों में जागरूकता पैदा हो सके। नगर पालिका अध्यक्ष का यह अंदाज लोग खूब पसंद भी कर रहे हैं जैसा की खबर है कि परिषद के कुछ अन्य पार्षद भी अब नगर पालिका अध्यक्ष का अनुकरण कर सकते हैं।

मुस्लिम समाज ने आतंकबाद के खिलाफ किया प्रदर्शन

सोहागपुर मुस्लिम समाज ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले के खिलाफ में किया प्रदर्शन। विगत दिवस जुमे की नमाज के उपरांत मुस्लिम समाज ने जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में पाकिस्तान मुर्दाबाद आतंकवाद मुर्दाबाद, के जमकर नारेबाजी करते हुए मुख्य बाजार में आतंकवाद का पुतला दहन किया गया। इसके पूर्व जुलूस एसडीएम कार्यालय में पहुंचकर अनुविभागीय अधिकारी अनिल जैन को राष्ट्रपति महामहिम के नाम ज्ञापन सौंपा गया। इसके बाद नगर के मुख्य चौराहे पर आतंकवाद का पुतला दहन किया गया । ज्ञापन में कहा गया है कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 मासूम निहत्थों की निरशंस हत्या की सोहागपुर का समस्त मुस्लिम समाज कड़ी निंदा करता है।इस घटना से सोहागपुर का मुस्लिम समाज आक्रोशित है। मुस्लिम त्यौहार कमेटी अध्यक्ष वसीम ख़ान ने बताया कि आतंकियों ने जिस तरह से घटना को अंजाम दिया है। उसके लिए इस्लाम धर्म में इसकी कोई जगह नहीं है ।यह पूर्णतः इस्लाम के विपरीत है। बल्कि अल्लाह ने अपने कुरान की सूरह अल माइदा 5:32-35 में कहा कि -यदि कोई किसी व्यक्ति को मारता है।तो यह ऐसा होगा जैसे उसने पूरे लोगों (मानवता) को मार डाला। इसके विपरित यदि कोई किसी की जान बचाता है। तो 'यह ऐसा होगा जैसे उसने पूरे लोगों (मानवता) की जान बचाई' । वहीं ज्ञापन में मुस्लिम समाज ने मांग की है। कि भारत सरकार शीघ्र-अतिशीघ्र घटना में शामिल आतंकियों को पकड़कर कड़ी से कड़ी सज़ा दे । ताकि आइंदा वक्त में कोई भी ऐसी घटना दोहराई ना जाए। इसके साथ ही हादसे में जान गंवाने वालो के परिजनों को आर्थिक सहायता एवं शासकीय नौकरी देने की मांग की गई। इस अवसर पर वसीर खान मैनेजर, अधिवक्ता संघ अध्यक्ष शेर खान, पूर्व पार्षद अजीज पहलवान, हाजी नईम गुड्डु, वकील हनीफ खान , वरिष्ठ पार्षद जमीलखान , अबरार हुसैन, मुश्ताक बाबा, शेखू बाबा, इकबाल बाबा, अध्यक्ष मुस्लिम त्यौहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान शेख राशिद, आरिफ मामू, इस्सू खान, जावेद खान, सोनू राजा शाह, माइकल खान, तौसीफ, आबिद, एहसान आदि समाज बन्धु उपस्थित थे।

कैट के आह्वान पर काश्मीर चौक पर एकजुट हुए व्यापारी व जनप्रतिनिधि

बैतूल। पहलगाम में 22 अप्रैल को हिन्दू पर्यटकों पर हुए इस्लामिक आतंकी हमले के विरोध में शुक्रवार रात्रि को जिले के व्यापारी संगठन आल इंडिया कन्फेडरेशन ट्रेडर्स (कैट) ने ज़बरदस्त आक्रोश व्यक्त किया। व्यापारी संगठन कैट के प्रचार सचिव राजेश मदान ने बताया कि शहर के गंज स्थित काश्मीर चौक पर समस्त व्यापारी, जनप्रतिनिधि एवं हिन्दू संगठन एकजुट हुए और कैंडल मार्च निकालकर पुलवामा में दिवंगत हुए निर्दोष हिंदुओं को श्रद्धांजलि दी एवं दो मिनट का मौन रखा। इस दौरान उपस्थित जनप्रतिनिधियों, व्यापारी संगठन के पदाधिकारियों, समाजसेवियों सहित समस्त व्यापारियों ने पाकिस्तान मुर्दाबाद, हिंदुओं के हत्यारों को फांसी दो जैसे नारे लगाकर एकमत से इस कायराना जघन्य हत्याकांड की निंदा की और भारत सरकार से मांग की कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए शीघ्र कठोर निर्णायक कार्यवाही की जाए। इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम में सामाजिक सौहार्द की झलक भी दिखाई दी। श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में विधायक हेमंत खंडेलवाल, नपाध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, जिला मंत्री अतीत पंवार, मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा, व्यापारी संगठन कैट के जिलाध्यक्ष मनोज भार्गव, प्रचार सचिव राजेश मदान, सचिव दीपक खुराना, कोषाध्यक्ष मनोज मेहता, धीरज हिराणी, चार्टर्ड एकाउंटेंट संघ अध्यक्ष प्रदीप खंडेलवाल, टैक्स बार एसोसिएशन अध्यक्ष राजीव खंडेलवाल, जनरल व किराना व्यापारी संघ अध्यक्ष बंटी मोटवानी, औषधि विक्रेता संघ अध्यक्ष मंजीत सिंह साहनी, मुकेश खंडेलवाल, जितेंद्र कपूर, दीपक कपूर, राजेश आहूजा, राजेंद्र सिंह चौहान केण्डू बाबा, कपड़ा व्यापारी संघ अध्यक्ष संजय पगारिया, टिम्बर व्यापारी संघ के अध्यक्ष राजा साहू, सीए धर्मेंद्र माहेश्वरी, दिलीप हिराणी, सुनील सलूजा, कुशकुंज अरोरा, संदीप तलेड़ा, संजय तलरेजा प्रवीण वराठे सहित बड़ी संख्या में कई संगठनों के सदस्य, व्यापारी, समाजसेवी एवं पत्रकार बंधु शामिल थे।

शा. हिंदी, उर्दू शाला से फिर हटाई गई उर्दू शिक्षिका

बगैर उर्दू शिक्षक के वर्षो से चल रहा है उर्दू स्कूल, विधायक ने कराया था अटैचमेंट अधिकारियों ने हटाया

बैतूल / मुलताई। पवित्र नगरी के नाका नंबर एक पर स्थित जिले का एकमात्र शासकीय हिंदी/उर्दू स्कूल एक बार फिर उर्दू शिक्षक विहीन हो गया है। स्कूल से जुड़े जनप्रतिनिधियों के 3 साल के संघर्ष एवं भाजपा विधायक चंद्रशेखर देशमुख के प्रयासों के बाद शासकीय हिंदी/उर्दू माध्यमिक विद्यालय मे पदस्थ की गई उर्दू शिक्षिका को विकासखंड शिक्षा अधिकारी के आदेश से उर्दू हिंदी स्कूल से हटकर वापस प्रभात पट्टन शाला में पदस्थ कर दिया गया है। एक बार फिर जिले का एकमात्र हिंदी उर्दू विद्यालय बगैर उर्दू शिक्षक के चल रहा है जिसको लेकर पालकों में भारी रोष है। स्कूल से जुड़े जनप्रतिनिधि और पालकों को कहना है कि जब उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक ही नहीं है, तो हम अपने बच्चों का दाखिला इस स्कूल में करा कर बच्चों का भविष्य क्यों खराब करें। हमने अनेकों बार उर्दू शिक्षक की मांग को लेकर धरना प्रदर्शन किया, वरिष्ठ अधिकारियों से बात की, जिला शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी से लेकर बीआरसी तक ने आश्वासन दिया कि अब उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक की कमी नहीं होने दी जाएगी, किंतु एक बार फिर उर्दू स्कूल से उर्दू शिक्षक हटाकर उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक

की कमी यथावत बना दी गई है।

विधायक ने कहा शीघ्र होगी उर्दू शिक्षक की नियुक्ति- उर्दू हिंदी स्कूल प्रारंभ करने से लेकर अब तक इस स्कूल को आरंभ रखने के प्रयास में जुटे हाजी सलीम खान ने विधायक चंद्रशेखर देशमुख के निवास पर पहुंचकर उन्हें हिंदी उर्दू स्कूल के शिक्षक की नियुक्ति के संबंध में चर्चा की। उन्हें स्कूल की समस्या से अवगत कराने के बाद हाजी सलीम खान ने बताया कि विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने आश्वासन दिया है कि शीघ्र ही मुलताई हिंदी उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक पदस्थ किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि शासकीय उर्दू हिंदी स्कूल में बीते 3 वर्षो से उर्दू शिक्षक की पोस्टिंग नहीं हुई है इसके बाद विधायक चंद्रशेखर देशमुख के प्रयासों से 27 सितंबर 2024 को पट्टन में पदस्थ उर्दू शिक्षिका फरहत अली को मुलताई हिंदी उर्दू स्कूल में संलग्नीकरण किया गया था, जो वर्तमान में विकासखंड शिक्षा अधिकारी के आदेश से निरस्त कर दिया गया।

बीईओ ने दिए आदेश संलग्नीकरण निरस्त -विकासखंड शिक्षा अधिकारी ने समस्त शाला प्राचार्य एवं संकुल प्राचार्य को संलग्नीकरण निरस्ती के निर्देश देते हुए यह सुनिश्चित करने का कहा है कि आपकी शाला में शिक्षक संलग्नीकरण की स्थिति न बनी रहे। समस्त शाला प्रमुखों को लिखे गए इस पत्र का उल्लेखनीय पहलू यह है कि इस संबंध में शासकीय हिंदी उर्दू शाला प्रधान पाठीका को उक्त सामान्य पत्र के साथ अलग से नोट में लिखा गया है कि वह उर्दू शिक्षिका फरहत अली को पत्र तामिल कराकर पावती लेवे।

इनका कहना है -

उर्दू शिक्षक की पोस्ट क्रिएट कराकर शिक्षक की नियुक्ति कराएंगे, छुट्टियां समाप्त होते ही इस समस्या का हल हो ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं।

- चंद्रशेखर देशमुख विधायक मुलताई

जगदीश मेडिकेयर का विधायक खंडेलवाल ने किया शुभारंभ, दिए 50 हजार

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के वरिष्ठ सदस्य स्व. जगदीश जसूजा के स्मृति में जसूजा परिवार ने एक कार्यक्रम आयोजित कर जगदीश मेडिकेयर की शुरुआत की। जिसका शुभारंभ विधायक हेमंत खंडेलवाल ने किया। इस अवसर पर विधायक हेमंत खंडेलवाल ने मेडिकल सामानों आदि के लिए व्यक्तिगत तौर पर 50 हजार रुपए देने की घोषणा की। गंज गुरुद्वारा रोड स्थित रिलायंस स्मार्ट बाजार के पास जगदीश मेडिकेयर सेंटर के शुभारंभ को विधायक श्री खंडेलवाल ने पुण्य कार्य बताया, उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति बीमार पड़ता है, तब ऐसी दशा में जरूरतमंद गरीब लोगों को मदद की जरूरत पड़ती है। ऐसे समय में जगदीश मेडिकेयर सेंटर से निशुल्क सहयोग मिलेगा। ऐसे पुण्य कार्य के लिए समाज को आगे आने की जरूरत है। विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि वे शव रखने की फ्रीजर जगदीश मेडिकेयर के माध्यम से जरूरतमंदों के लिए उपलब्ध कराते रहेंगे। अत्यंत संक्षिप्त व गरिमापूर्ण आयोजित इस कार्यक्रम को अन्य अतिथियों ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे स्टेट बैंक से सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक बलराम जसूजा ने कहा कि जगदीश मेडिकेयर के माध्यम से जरूरतमंदों को हॉस्पिटल बेड, व्हील चेयर, वॉकर, स्टिक आदि सभी प्रकार के इंस्ट्रूमेंट का निःशुल्क

सेवा दी जायेगी । श्री जसूजा ने कहा कि आज हमारे परिवार के लोगों ने जो मुकाम हासिल किया है, यह सब उनके पिता तुल्य बड़े भाई स्व. जगदीश जसूजा की देन एवं आशीर्वाद है। उन्होंने बताया कि बैंक अधिकारी पद से सेवानिवृत होने के बाद अपने चार मित्रों के साथ नित्या सेवा समिति का गठन कर सेवाभावी कार्य शुरू किया था। इस समिति के माध्यम से अब तक 1000 से अधिक पेड़ लगाए चुके हैं। जिसमें लगभग 95 प्रतिशत पौधे पल्लवित हो चुके हैं। अब उनके इस समिति में लगभग डेढ़ दर्जन सदस्य हो चुके हैं, जिनके माध्यम से वे अब गौ सेवा की लिए कार्य करने की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। उन्होंने कहा वे अपने समिति के साथियों के साथ अभी हाल ही में पारसडोह डैम के पास संचालित हो रहे गौ सेवा केंद्र को देखकर आए हैं। श्री जसूजा ने उक्त गौशाला को बेहतर ढंग से संचालन करने की इच्छा विधायक श्री खंडेलवाल के समक्ष जाहिर की। इस विषय पर विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि वे खुद पिछले 10 वर्षों से उस गौशाला के लिए सहयोग करते आ रहे हैं। इसलिए वर्तमान में जो संचालित कर रहे हैं उनको साथ में लेकर संचालन कर सकते हैं। नित्या सेवा समिति के अध्यक्ष बलराम जसूजा ने कहा कि बैतूल शहर के आस पास कहीं भी नजूल अथवा राजस्व की सरकारी जमीन मिलती है तो गौ चिकित्सा केंद्र खोलने की योजना है ।

जगदीश मेडिकेयर को इन्होंने दिया सहयोग - मुख्य अतिथि विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा 50 हजार रुपए व्यक्तिगत रूप से देने की घोषणा की है। वहीं कार्यक्रम के दौरान मंच पर मौजूद स्वैक्षिक सेवानिवृत्त हुए रेवेन्यू इंस्पेक्टर हरीश गढ़ेकर द्वारा एक व्हीलचेयर दी जाएगी। नरेंद्र हिरानी ने ऑक्सीजन कंसंट्रेटर, नानकराम आहूजा ने हास्पिटल बेड जगदीश मेडिकेयर में सहयोग देने की बात कही है। कार्यक्रम में विशेष रूप से वासुदेव जसूजा, राजकुमार जसूजा, नारायण जसूजा, राजेश जसूजा, पिंटू परिहार, पार्षद विजय जसूजा सुरेंद्र कपूर, राजेश मदान, पत्रकार कल्याण परिषद से वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम सिंहा और परिषद के महासचिव वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार अनिल ठाकुर, नवल वर्मा, दीपक पाल सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

बॉलीवुड और पहलगाम का रिश्ता पुराना रहा है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम के पास स्थित बैसरन में हुए आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया। जहां कभी सैलानी कुदरत की खूबसूरती को कैमरे में कैद करते थे, वहीं आज इस धरती पर खून बहा है। यह बैसरन, जिसे 'मिनी स्विट्जरलैंड' कहा जाता है, बॉलीवुड की कई यादगार फिल्मों का हिस्सा रह चुका है।

हिंसा की इसी जगह पर कई फिल्मों की कहानियां गढ़ी गईं

अब कश्मीर के पहलगाम की बैसारन वादियां दहशत के साए में हैं। हरे-भरे मैदान, कल कल करती नदियां और घने जंगल यही तो वो नजारे हैं, जो फिल्मकारों को बार-बार पहलगाम की ओर खींच लाते हैं। पहलगाम, अनंतनाग जिले का एक खूबसूरत हिल स्टेशन है, जो हमेशा से हिंदी फिल्मों की शूटिंग के लिए पसंदीदा लोकेशन रहा है। 1950-60 के दशक से लेकर आज तक पहलगाम ने कई क्लासिक और मॉडर्न फिल्मों की कहानियों को अपने आंचल में जगह दी है।

जहां कभी कैमरे चलते थे, वहां अब सुरक्षाबलों की पैनी नजर है. जिस बैसारन घाटी में 'बजरंगी भाईजान' की मासूम मुन्नी दौड़ती दिखी थी, वहीं अब गोलियों की आवाज गूंज चुकी है। कश्मीर की खूबसूरती को बार-बार पर्दे पर लाने वाले इन लोकेशन को फिर से वही रौनक मिले, यही हर सिनेप्रेमी की ख्वाहिश है। फिलहाल, फिल्में आती हैं और चली जाती हैं, लेकिन जो छवि वो लोकेशन की बना जाती हैं, वो अमर हो जाती है। पहलगाम ऐसी ही एक जगह है जहां प्रकृति मुस्कुराती है। लेकिन, अब वहीं से एक टीस भी उठ रही है। उम्मीद है, कि ये खूबसूरत वादियां फिर से सिर्फ प्यार, शांति और सिनेमाई आवाजों से गूंजेंगी।

जानते हैं किन-किन फिल्मों की शूटिंग यहां हुई और कैसे इन फिल्मों ने पहलगाम को परदे पर अमर कर दिया।

जब तक है जान- साल 2012 में आई यश चोपड़ा की इस रोमांटिक फिल्म में शाहरुख खान, कैटरीना कैफ और अनुष्का शर्मा मुख्य भूमिकाओं में थे. फिल्म के कुछ खूबसूरत सीन्स पहलगाम की वादियों में शूट किए गए। खासकर 'जिया रे' गाना, जिसमें अनुष्का का बिंदास अंदाज दिखाया गया है, उसे बैसारन की खुली वादियों में फिल्माया गया. इस गाने के जरिए दर्शकों को कश्मीर की खूबसूरती का अलग ही एहसास हुआ।

राज़ी- साल 2018 में मेघना गुलजार की ये जासूसी थ्रिलर फिल्म आलिया भट्ट और विक्की कौशल की दमदार परफॉर्मेंस के लिए जानी जाती है। फिल्म में दिखाया गया विदाई का दृश्य पहलगाम के पास दूधपथरी

इलाके में शूट किया गया था। शांत और सुरम्य वातावरण ने उस इमोशनल सीन को और भी प्रभावशाली बना दिया।

हैदर- साल 2014 में विशाल भारद्वाज की इस फिल्म ने कश्मीर की सच्चाई और दर्द को बड़े परदे पर उतारा था। शाहिद कपूर और श्रद्धा कपूर की यह फिल्म पूरी तरह कश्मीर पर आधारित थी। इसके कई सीन्स पहलगाम

में शूट हुए थे। फिल्म का फेमस गाना 'बिस्मिल' मार्तंड सूर्य मंदिर में शूट हुआ था, जो पहलगाम के रास्ते में आता है। फिल्म के क्लाइमेक्स की शूटिंग भी यहीं की गई थी।

बजरंगी भाईजान- साल 2015 में सलमान खान की इस सुपरहिट फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाया था। इसमें दिखाया गया बैसारन घाटी का दृश्य दरअसल पहलगाम का ही हिस्सा है। जहां फिल्म का इमोशनल गाना 'भर दे झोली मेरी' शूट हुआ था। पहलगाम की प्राकृतिक सुंदरता ने इस सीन को दर्शकों के दिल में बसाने लायक बना दिया था।

हाईवे- साल 2014 में इम्तियाज अली की इस फिल्म में आलिया भट्ट और रणदीप हुड्डा की जोड़ी नजर आई थी। फिल्म के दूसरे हिस्से में दोनों किरदार पहलगाम के पास स्थित अरु वैली पहुंचते हैं, जहां वो कुछ वक्त शांति से बिताते हैं। अरु वैली, पहलगाम से करीब 12 किलोमीटर दूर स्थित है, और बेहद खूबसूरत जगह मानी जाती है।

रियल बॉक्स

परदे पर सच को छलने की तकनीक है 'एआई'

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म निर्माण बेहद पेचीदा और श्रमसाध्य काम है। वास्तव में तो ये कोई काम नहीं, एक जुनून है। जिसे इसकी धुन लग जाती है, वो सब कुछ छोड़कर इसमें खो सा जाता है। यह जानते हुए कि फिल्म का भविष्य दर्शकों की पसंद और नापसंद पर टिका होता है। हिंदी फिल्मों के सौ साल से ज्यादा लंबे इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जब फिल्मकारों ने अपनी सारी प्रतिभा किसी एक फिल्म के लिए झोंक दी, फिर भी नतीजा मनमाफिक नहीं रहा। समय बीता और उसके साथ बहुत कुछ बदला। फिल्म निर्माण की तकनीक में भी सुधार आया। पर, ये वो काम है, जो तकनीक समृद्धता से ज्यादा बौद्धिक क्षमता पर निर्भर है। ऐसी बौद्धिकता जो दर्शकों को प्रभावित करे और उन्हें ढाई-तीन घंटे तक सीट पर बांधकर रखे। क्योंकि, जरूरी नहीं कि तकनीकी समृद्धता से दर्शक आकर्षित हों। बात बस इतनी सी है, कि जो फिल्म देखने वाले प्रभावित करे वही सफल फिल्म मानी जाती है। फिल्म इंडस्ट्री में राज कपूर और सुभाष घई जैसे बड़े शोमेन हुए, पर श्याम बेनेगल और महेश भट्ट को पसंद करने वाले भी कम नहीं हैं। क्योंकि, दर्शकों बांधकर रखने की दक्षता उनमें भी रही।

इस बात से इंकार नहीं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी यानी 'एआई' ने फिल्म उद्योग को कई तरह से बदल दिया। आश्चर्यजनक है कि इस तकनीक ने फिल्म उद्योग को वहां भी बदला, जहां इससे कुछ नया होने की उम्मीद नहीं की जा रही थी। तात्पर्य यह कि फिल्म निर्माण प्रक्रिया का लगभग हर पहलू इस तकनीक से प्रभावित होने लगा। संपादन और रिकॉर्डिंग सॉफ्टवेयर, फॉर-के और 3-डी मूवी तकनीक, ड्रोन और एआई आधारित पटकथा लेखन टूल से भी फिल्म निर्माण प्रक्रिया पर असर पड़ा। इसके जरिए दृश्य तकनीक और फिल्म देखने के अनुभव, बेहतर ध्वनि प्रभाव, नए स्क्रीनिंग इंटरफ़ेस, आधुनिक संपादन उपकरण पहले कभी न देखे गए अनुभव दर्शाते हैं। साफ़ शब्दों में कहा जाए, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी के प्रयोग के बाद फिल्म उद्योग में नए प्रयोगों का दरवाजा खुल गया। साथ ही यह फिल्म निर्माण की दुनिया के लिए यह क्रांतिकारी कदम रहा। 'एआई' में फिल्म निर्माण प्रक्रिया को हर तरह से व्यवस्थित किया है, जिससे इस कारोबार की संचालन दक्षता बढ़ाने, श्रम लागत कम करने और अधिक कमाई करने में सक्षम बनाया जा सके।

फिल्म निर्माण की तकनीक में साल दर साल बदलाव आता रहा। तकनीक के साथ फिल्मकारों के साथ दर्शकों की सोच भी बदली। लेकिन, हाल के बरसों में जो क्रांतिकारी बदलाव देखने में आया, वो है कृत्रिम बौद्धिकता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का फिल्म निर्माण में उपयोग। फिल्म की कहानी के विस्तार से लगाकर हर मामले में 'एआई' का दखल बढ़ा है। फिल्में और 'एआई' का संयोजन इस दिशा में एक नए युग की शुरुआत है। अब तो 'एआई' की मदद से हिंदी फिल्में अधिक प्रभावी ढंग से बनाए जाने की कोशिश होने लगी। सबसे ज्यादा काम पटकथा लेखन जैसे मामले में होने लगा, जो कि फिल्म निर्माण की रीढ़ होता है। 'एआई' से पटकथा लेखन को अधिक प्रभावी बनाने के साथ नई कहानियों के प्लाट भी गढ़े जाने लगे। इससे यह भी अंदाजा होने लगा कि पटकथा का ये आइडिया दर्शकों की पसंद पर खरा उतरेगा या नहीं! अब तो 'एआई' की मदद से कैरेक्टर डेवलप करना भी आसान होने लगा। वास्तविक और आकर्षक कैरेक्टर को गढ़ने में भी 'एआई' की मदद ली जाने लगी, जो कल्पनाशीलता से परे हैं। बाहुबली, रा-वन और 'कृष' जैसी हिंदी फिल्मों में ऐसे कैरेक्टर्स दिखाई दिए, जिन्हें आसानी से गढ़ना और उनका फिल्मांकन आसान नहीं है। जबकि, हॉलीवुड की फिल्मों में ऐसे कैरेक्टरों की दशकों से भरमार है।

'एआई' का उपयोग किसी फिल्म की स्क्रिप्ट का विश्लेषण करने के लिए भी किया जा सकता है, ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि फिल्म दर्शकों को पसंद आने के साथ और बॉक्स ऑफिस पर फायदेमंद होगी या नहीं। हालांकि, एल्गोरिदम भविष्यवाणियां पूरी तरह से सटीक साबित नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए, वार्नर ब्रदर्स ने अपनी फिल्मों की सफलता और बॉक्स ऑफिस की भविष्यवाणी करने के लिए सिनेलिटिक एआई-आधारित प्लेटफार्म की की तरफ रुख किया है। 20वीं सेंचुरी फॉक्स ने मर्लिन प्रणाली को एकीकृत किया, जो फिल्मों को विशेष शैलियों और दर्शकों से मिलाने के लिए 'एआई' और मशीन लर्निंग का उपयोग करता है। साथ ही किसी भी फिल्म के लिए सारे आंकड़े उपलब्ध कराता है। स्क्रिप्ट बुक एक अन्य एआई-आधारित प्रणाली है, जो फिल्म को लेकर

भविष्यवाणी करती है। इसका उपयोग सोनी पिक्चर्स अपनी 62 फिल्मों का विश्लेषण करने के लिए कर चुका है।

प्री-प्रोडक्शन में भी 'एआई' का उपयोग किया जाने लगा है। इसकी मदद से शेड्यूल बनाने, कहानी के लिए उपयुक्त शूटिंग स्थल की खोज भी संभव है। इसके अलावा 'एआई' में निर्माण प्रक्रियाओं में सहायता और प्री-प्रोडक्शन प्रक्रिया को सरल बनाने की काफी क्षमता है। 'एआई' को लागू करने से अभिनेताओं की उपलब्धता के अनुसार शूटिंग शेड्यूल की योजना स्वचलित हो सकेगी। इससे समय की बचत होगी और दक्षता में वृद्धि आएगी। इसके साथ ही एआई सिस्टम पटकथा में उल्लेखित स्थानों का विश्लेषण भी कर सकता है। शूटिंग के लिए वास्तविक साइटों की जानकारी दे सकता है। आशय यह कि फिल्मकार का निर्माण संबंधी अनावश्यक खर्च बचने लगा।

हॉलीवुड फिल्मों के बाद हिंदी फिल्मों में भी 'एआई' का उपयोग बढ़ता जा रहा है। कई फिल्मों में इसका प्रभावी उपयोग किया भी गया। पिछले डेढ़ दशकों में ऐसी कई फ़िल्में आई जिनमे कहीं न कहीं एआई तकनीक का असर दिखाई दिया। 'एआई' का उपयोग फिल्मों में लगातार बढ़ता जा रहा है, और भविष्य में इसका उपयोग और भी अधिक होने की संभावना है। 'रोबोट' (2010) फिल्म में एआई से रोबोट का चरित्र गढ़ा गया। 'रा वन' (2011) में भी एआई से विजुअल इफेक्ट्स और रोबोट का चरित्र को बनाया। 'कृष-3' (2013) में एआई से विजुअल इफेक्ट्स और सुपर हीरो के चरित्र बनाया था। 'बाहुबली' (2015) में एआई से विजुअल इफेक्ट्स और एनिमेशन किया गया। फिल्म '2.0' (2018) में एआई से विजुअल इफेक्ट्स और रोबोट का किरदार बनाया गया। इस फ़िल्म में एआई का उपयोग सबसे ज्यादा किया गया था। 'मिशन मंगल' (2019) में एआई से स्पेस मिशन के दृश्यों को प्रभावी बनाया गया। 'विक्रम वेधा' (2022) में एआई से विजुअल इफेक्ट्स और एनिमेशन के लिए किया गया था।

हिंदी फिल्मों में एआई का सबसे ज्यादा उपयोग '2.0' फ़िल्म (2018) में हुआ। यह फिल्म रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित थी। इसमें एआई का उपयोग विजुअल इफेक्ट्स, रोबोट के चरित्र को बनाने और फिल्म के संगीत और ध्वनि डिजाइन में किया गया था। '2.0' फिल्म में एआई का उपयोग करने के लिए फिल्म के निर्देशक एस शंकर ने कई एआई टूल्स और तकनीकों का उपयोग किया था। फ़िल्म में विजुअल इफेक्ट्स के लिए एआई का उपयोग किया था, जिससे रोबोट के चरित्र को अधिक वास्तविक और आकर्षक बनाया जा सके। फिल्म में फेस रिकग्निशन तकनीक का भी उपयोग किया गया, जिसमें रोबोट के चरित्र को पहचानने और उसके चेहरे के भावों को समझने में काफी हद तक मदद मिली। फिल्म में मोशन कैप्चर तकनीक का उपयोग भी किया गया था, जिससे रोबोट के चरित्र की गतिविधियों को अधिक वास्तविक और आकर्षक बनाया जा सके। फिल्म में संगीत और ध्वनि डिजाइन के लिए एआई का भी उपयोग हुआ था, जिससे फिल्म के संगीत और ध्वनि को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाया जा सके। इन एआई तकनीकों का उपयोग करके '2.0' फिल्म के निर्देशक एस शंकर ने एक ऐसी फिल्म बनाई, जो न केवल दर्शकों को आकर्षित करती है, बल्कि एआई की क्षमताओं को भी प्रदर्शित करती है।

एआई से हिंदी फिल्मों में कई फायदे के साथ चुनौतियां भी हैं। 'एआई' के उपयोग से हिंदी फिल्मों में अधिक प्रभावी ढंग से काम किया जा सकता है। लेकिन, इसके साथ रचनात्मकता और गुणवत्ता की कमी का ध्यान रखना भी आवश्यक है। अभी ये शुरुआती दौर है। समय के साथ 'एआई' का उपयोग बढ़ेगा और फिल्म निर्माण का काम आसान होता जाएगा। तब पूरी फिल्म एक कमरे में बैठकर बना ली जाए, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए! क्योंकि, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से वो सब कुछ संभव है, जिसे अभी तक नामुमकिन समझा जा रहा था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

रात में ही होती थी इस फिल्म की शूटिंग

फिल्ममेकर संजय लीला भंसाली के फिल्मों की कहानी कुछ ऐसी होती है कि उनका बॉक्स ऑफिस पर छा जाना तो बनता ही है। उनकी एक ऐसी ही फिल्म साल 2022 में आई थी। उनकी ये फिल्म काफी चर्चा में रही। फिल्म का नाम 'गंगूबाई काठियावाड़ी' है। 2022 में रिलीज हुई इस फिल्म में आलिया भट्ट ने लीड रोल निभाया था। आलिया के अलावा फिल्म में शांतनु माहेश्वरी, विजय राज, सीमा पाहवा, जिम सर्भ और अजय देवगन जैसे सितारे भी शामिल हैं।

फिल्म की कहानी एक मशहूर माफिया क्वीन गंगूबाई काठियावाड़ी के बारे में है, जिसे उसके बॉयफ्रेंड ने सिर्फ 500 रुपये के लिए कोठे में बेच दिया था। बॉयफ्रेंड से धोखा मिलने के बाद गंगूबाई पूरी तरह टूट गई थी। फिर उसने मुंबई के रेड लाइट एरिया में अपनी नई जिंदगी शुरुआत की और माफिया क्वीन बनी। पूरी फिल्म गंगूबाई के इर्द-गिर्द घूमती है। आईएमडीबी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' की पूरी शूटिंग रात में ही हुआ करती थी, क्योंकि कहानी के हिसाब से यह दिन में शूट नहीं हो सकती थी।

100 करोड़ के बजट में तैयार हुई इस फिल्म ने 132.01 करोड़ रुपये का बिजनेस किया था। इसका वर्ल्डवाइड कलेक्शन

211.5 करोड़ रुपये का था। 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के लिए आलिया भट्ट ने बेस्ट एक्ट्रेस का नेशनल अवॉर्ड जीता था। वहीं, बेस्ट एक्ट्रेस का फिल्मफेयर अवॉर्ड भी अपने नाम कर लिया था। आईएमडीबी के अनुसार, 'गंगूबाई काठियावाड़ी' ने टोटल 49 अवॉर्ड जीते।

परदे के वे खल पात्र जिनकी सनक आतंकियों जैसी

अशोक जोशी

सिनेमा में घृणित आतंकी सोच वाले सनकी किरदारों की लंबी फेहरिस्त रही है। इन किरदारों को तभी से परदे पर पेश किया जाने लगा, जब सिनेमा ने घुटने-घुटने ही चलना सीखा ही था।

जब सिनेमा थोड़ा वयस्क हुआ और दर्शकों को नकारात्मक किरदार पसंद आने लगे तो गब्बर, मोगैम्बो, डॉ डैंग, शाकाल और भीखू म्हात्रे जैसे किरदार रचे गए। परदे पर तो इनकी भूमिका नकारात्मक थी ही, इनके चरित्र को इस रूप में रचा गया था कि दर्शकों को उनसे घृणा होने लगी थी।

पिछले दिनों कश्मीर की हरी-भरी वादियों में जब खून का लाल रंग बहा तो देश ने आतंक का एक नया रूप देखा। इस घृणित कृत्य को अंजाम देने वाले महज आतंकवादी नहीं थे। यदि वे आतंकवादी होते, तो आते और लोगों को गोलियों से छलनी करके चले जाते। लेकिन, जिस तरह से उन्होंने हर पर्यटक से उसके धर्म की जानकारी ली और पुष्टि करने के बाद सभी को एकत्रित करके मारा उससे ऐसा लगता है कि वे आतंकवादी होने के साथ सनकी किस्म के लोग थे। उन्होंने अपने सनकीपन का परिचय देते हुए इस नरसंहार को अंजाम दिया। इन सनकियो ने जिस तरह के व्यवहार का प्रदर्शन किया, उसे देखकर हिंदी सिनेमा के कई ऐसे किरदार आंखों के सामने घूमने लगते हैं, जो किसी भी सूरत में इन सनकी आतंकी किरदारों से कम नहीं कहे जा सकते।

हिंदी सिनेमा में इस तरह की सोच के सनकी किरदारों को तभी से परदे पर पेश किया जाने लगा, जब से सिनेमा ने घुटने-घुटने ही चलना सीखा था। उन दिनों अधिकांश फिल्में पौराणिक कथाओं पर आधारित हुआ करती थी। इस तरह की कथाओं में कभी भूत-प्रेत कभी दानव और राक्षस के रूप में इस तरह के सनकी किरदार परदे पर उभारे गए। उन दिनों इस तरह के किरदारों को निभाने वाले कलाकार भी तय थे। पौराणिक फिल्मों में भय और आतंक मचाने में उन दिनों बीएम व्यास, तिवारी, हीरालाल और हबीब जैसे कलाकारों को महारथ हासिल थी। आश्चर्य की बात यह कि परदे पर अपने भयानक अट्टहास से आतंक मचाने वाले बीएम व्यास हो या तिवारी या हीरालाल सभी उच्च कुल से संबंधित थे।

इसके बाद ऐतिहासिक फिल्मों का दौर आया, जिसमें कुछ ऐसे खतरनाक सनकी ऐतिहासिक पात्र परदे पर प्रस्तुत किए, जिन्होंने दुनियाभर में आतंक बरपाकर लोगों को भयभीत कर रखा था। चंगेज खान और हलाकू ऐसे ही किरदार थे। आतंक ही जिनका पर्याय था। ऐसे पात्रों में कभी प्रेमनाथ कभी शेख मुख्तार तो कभी खलनायकों के बादशाह प्राण ने दर्शकों में

खौफ पैदा करने का कमाल किया था। इसके बाद जब आधुनिक काल आया, तो यहां भी ऐसे किरदार परदे पर आए जिन्होंने नए-नए तरीके अपनाकर आतंक और भय का वातावरण रचने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

'जिस देश में गंगा बहती है' का राका ऐसा ही खूंखार डाकू था, जो दुल्हनों की गरदन से आभूषण खिंचते समय यह परवाह तक नहीं करता था कि इससे गला कट कर दुल्हन डोली पर चढने के बजाए अर्थी पर चढ जाती है। प्राण ने इस किरदार को बखूबी पूरे आतंक के साथ पेश किया था। समय के साथ प्राण ने तो अपनी अभिनय शैली बदल डाली, लेकिन सनकी सोच वाले किरदार नए नाम और नए रूप के साथ परदे पर आते-जाते रहे।

जब से बॉलीवुड में साइको-थ्रिलर का युग आरंभ हुआ, परदे पर एक बार फिर आतंक की लहर छा गई। इस बार परदे पर आतंक मचाने में किसी खलनायक की जरूरत नहीं थी। बल्कि नायक कहलाने वाले अभिनेताओं ने यह कमाल किया है। इस श्रृंखला में शाहरुख खान का नाम सबसे ऊपर आता है। 'बाजीगर' में बदला लेने की सनक में वह नायिका की बहन को मल्टी स्टोरी बिल्डिंग से धकेल कर जिस कुटिलता से मुस्कुराती है,देखकर दर्शकों की रूह कांप जाती है। इसके बाद 'डर' में एक बार फिर शाहरुख ने कभी हाथ की नस काटकर तो कभी चोला बदलकर नायिका को क ... क .... किरण बोलकर डराने के साथ साथ दर्शकों को भी डराने का काम किया। शाहरुख ने 'अंजाम' में भी ऐसा ही किरदार निभाया था।

इसी तरह की एक अंग्रेजी फिल्म थी 'स्लीपिंग विद द एनिमी' जिसका हिन्दी रूपांतर कर दो फिल्में बनाई गई थी। एक थी 1996 में रिलीज 'अग्निसाक्षी' और दूसरी थी 'दरार।' अग्नि साक्षी में जहां नाना

पाटेकर ने सनकी पति की भूमिका कर परदे पर आतंक बरपाया था, तो 'दरार' में इसी तरह की खतरनाक भूमिका कर अरबाज खान फिल्म फेयर पुरस्कार ले गए। इससे पहले बीआर चोपड़ा की फिल्म 'धुंध' में डैनी ने जीनत अमान के सनकी पति की भूमिका कर सनसनी फैलाई थी।

सिनेमा के परदे पर हिंसा के साथ सनकी व्यवहार कर सनकी सोच को बढ़ावा देने वाले किरदारों में 'शोले' का गब्बर अमजद खान चोटी पर पहुंचे, तो 'चाइना गेट' में सनकीपन को संवादों के साथ पेश करने में मुकेश तिवारी ने जो किया 'मेरे मन भाया, कुत्ता मार के खाया' ने सारी हदें पार कर दी थी। दर्शकों को हराने में शुद्ध हिन्दी बोलने वाले शिव भक्त आशुतोष राणा भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने 1999 में प्रदर्शित फिल्म 'संघर्ष' में लज्जा शंकर पांडे बनकर खतरनाक किलकारी मारी थी। इससे एक साल पहले प्रदर्षित दुश्मन में उन्होंने गोकुल पाण्डे बनकर दर्शकों को पसीने से तर कर दिया था।

अजय देवगन ने 2002 में प्रदर्षित 'दीवानगी' में ऐसे ही शातिर और सनकी किरदार तरंग भारद्वाज बनकर आतंक बरपाया। उनकी अन्य फिल्म 'दिलवाले' में अमरीष पुरी ने अजीबोगरीब गेटअप के साथ दर्शकों को डराया था। इससे पहले भी अमरीश पुरी 'मिस्टर इंडिया' में मोगैंबो बनकर आतंक फैलाकर खुश होते दिखाई दिए। रमेश सिप्पी की फिल्म 'शान' का शाकाल भी कुछ कुछ सनकी किरदार था जो कभी भी किसी को भी बिना सोचे समझे मगरमच्छ की खुराक बनाने से नहीं हिचकिचाता था।

मनोज बाजपेयी सनकी सोच वाले किरदार भीखू म्हात्रे बनकर परदे पर छाए, तो 'रोड' में बाबू बनकर उन्होंने एक बार फिर परदे पर आतंक फैलाने में कामयाबी पायी थी। 'रमन राघव' में रमन्ना जैसे खूंखार हत्यारे की भूमिका निभाकर नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने आतंक की महिमा मंडित की तो 'एक विलेन' में सनकी प्रेमी और हत्यारे की भूमिका में रितेश देशमुख ने जान डाल दी थी। गुलशन ग्रोवर को भी ऐसी भूमिका निभाने में महारत हासिल थी। वे तरह तरह के गेटअप बदलकर बेडमेन के चरित्र को परदे पर पेश कर सनक का सिलसिला आगे बढाते रहे। डेनी ने 'हम' और 'घातक' के अलावा अफगानिस्तान में फिल्माई फिल्म 'खुदा गवाह' में एकदम इसी तरह स्वांग भरकर आतंकवादी सोच को परदे पर पेश किया। इस तरह के सनकी किरदार निभाने के लिए 'रंगा खुश' बनकर मारकाट मचाने वाले जोगिंदर का नाम भी याद आता है।

ऐसी बात नहीं कि परदे पर सनकी किरदार निभाने में केवल पुरुष पात्रों का ही एकाधिकार रहा है। 1997 में प्रदर्शित फिल्म 'गुप्त' में प्यार की खातिर जान लेने देने की सनकी ईशा सिन्हा की भूमिका में काजोल जैसी अभिनेत्री कामयाब रही। नाजुक और बच्ची सी लगने वाली उर्मिला मातोंडकर ने 'मर्डर' में भयानक तरीके से अपनी भूमिका पेशकर दर्शकों को डराने का काम पूरी शिद्दत के साथ किया था। आज के जमे हुए कलाकारां में रणबीर सिंह 'पद्मावत' में, बॉबी देओल 'एनिमल' में और ताजा ताजा अक्षय खन्ना औरंगजेब के उसी सनकी रूप को परदे पर 'छावा' में दिखा चुके हैं जो घृणित रूप दुनिया ने पहलगाम में देखा। ऐसे में प्रश्न उठना लाजमी है कि क्या परदे पर निर्माता इस तरह के चरित्र पेशकर आतंकवादियों की सनक को खाद पानी तो नहीं दे रहे हैं!

खंडहर में उम्मीद की कोंपलें...!

प्रकाश पुरोहित

मौका तो था इंदौर की देवलालीकर कला वीथिका में सवा सौ साल की नुमाइश का, जिसमें मकबूल फ़िदा हुसैन जैसे कई नामी चित्रकारों के काम नुमाया हैं, लेकिन तभी देखा, कुछ युवा पीछे की तरफ चले जा रहे हैं हाथ में रंग और कूची लिए। पता लगा कुछ अनोखा काम हो रहा है। पहली नजर में तो उस उजाड़ मैदान में कुछ खास नजर नहीं आया, लेकिन जैसे ही नजरें ठहरने लगीं तो सामने अद्‌भुत नजारा था।

मैदान में इंदौर के प्राचीनतम शासकीय ललित कला संस्थान (फाइन आर्ट कॉलेज) के भग्नावेश यहां-वहां बिखरे पड़े थे और उन्ही पत्थर के टुकड़ों पर युवा और उम्रदराज पीढ़ी मिल कर चित्र उकेर रही थी। ना तो ढंग की बैठने की जगह थी और ना ही इस तपती-जलती धूप का कोई इलाज, लेकिन ये दीवाने जैसे सब भूल कर सिर्फ उन पत्थरों को रंगने में लगे थे, कोई आकार दे रहे थे और बता रहे थे कि **'पत्थरों में भी जुबान होती है, दिल होते हैं...'** पत्थरों का यह ऐसा केनवास था, जिसका कुछ भी समान नहीं था और उसके टेढ़े-मेढ़े होने को ही ये कलाकार अपने रंग और कल्पना से सीधा करने में लगे थे! पत्थरों को इधर से उधर भी नहीं किया गया था कि ऐसा करना संभव भी नहीं था। जो पत्थर जहां पड़ा था, उसके हिसाब से ही ना सिर्फ चित्र या रेखाएं उकेरनी थीं, बल्कि अपने बैठने के लिए भी वहीं जगह भी बनानी थी। कई तो उकड़ूं बैठे तो कोई घुटनों के बल या फिर आधे झुके-झुके! क्या यह कोई साधना थी या इम्तिहान? बताया गया कि एक दिन नहीं, पूरे तीन दिन तक यह सिलसिला चला, जिसमें करीब दो सौ कलाकारों ने हाजिरी दर्ज कराई।

इन्हें किसी ने न्यौता नहीं था, बस, अपने आप चले आ रहे थे, जैसे किसी यज्ञ में अपनी समिधा शामिल कर रहे हों। यहां पानी तक का इंतजाम नहीं था, चाय या कुछ और तो जाने दीजिए। आते-जाते ही अपनी श्रद्धा-भक्ति से चाय पिलवा रहे थे! सभी अपनी बोतलों में पानी ले कर आ रहे थे और एक-दूसरे की प्यास बुझा रहे थे। सुबह आठ बजे से यह सिलसिला शुरू होता तो फिर रात कब बंद होगा, कुछ तय नहीं था। कोई नियम नहीं, कोई रजिस्ट्रेशन नहीं और सुविधा भी नहीं!

कलाकारों से बात हुई तो बताया कि ये जो खंडहर आप देख रहे हैं, यह कभी हमारा कॉलेज था, जो बारह बरस पहले इस वजह से तोड़ दिया गया था कि खतरनाक हो गया है। उम्मीद थी कि यह नया बनेगा, लेकिन सरकार की नीयत में खोट थी तो विजय नगर से आगे किराए का दे दिया, जहां अब कोई नहीं जाता है, क्योंकि कला के अपने संस्कार होते हैं, जो नए भवन से नहीं बनते है। यहां सरकार की मंशा मॉल बनाने की है। आप देख ही रहे हैं कि कला-वीथिका के पीछे का हिस्सा उजाड़ पड़ा है।

तभी कुछ कलाकारों ने सोचा कि यह जमीन सिर्फ मिट्टी नहीं है, कला की कर्मभूमि रही है तो हम इसका वजूद खत्म नहीं होने देंगे। ये जगह सिर्फ कला के लिए रहे और हमारा कॉलेज फिर से यहीं बने। तब कुछ कलाकारों ने बैठक की और तय किया कि हम आंदोलन तो कर नहीं सकते, लेकिन अपनी कला से विरोध तो दर्ज कर ही सकते हैं। सड़क पर उतर कर हम नारेबाजी नहीं कर सकते, तो यही तरीका निकाला गया कि उलट हालात के बावजूद हम यहीं बैठ कर चित्रकारी करेंगे और ऊपर तक हमारी यह मांग पहुंचाएंगे।

बातचीत के दौरान यह तय पाया गया कि तीन दिन तक हम इन पत्थरों पर रंग लगा कर विरोध बताएंगे। ऐसा हम आगे भी करते रहेंगे। यह आंदोलन की शुरुआत है, अंत नहीं। अच्छी बात यह है कि सभी उम्र के कलाकार यहां आ रहे हैं और बता रहे हैं कि हम साथ-साथ हैं। सिर्फ चित्रकार ही नहीं, बाकी कलाकार और आमजन भी यहां नजर आ रहे थे। इन सभी का यह दर्द सांझा है कि ऐतिहासिक महत्व की इस जगह को बाजार के हाथों नहीं बेचने देंगे। आर्ट गैलरी की भी हालत खस्ता है और शायद उसके भी ढहने का इंतजार किया जा रहा है। सरकार को यह मौके की जगह नजर आ रही है, लेकिन हमारे लिए तो यह पवित्र-भूमि है, जहां कितने-कितने चित्रकारों- कलाकारों ने कूची चलाना सीखा!

यहां जब पहले दिन आए तो नाक बंद करनी पड़ी, इतनी गंदगी और बदबू थी इस भारत के 'स्वच्छ शहर' के इस नामी हिस्से में। कुत्ते की लाश यहां सड़ रही थी, जिसे हमने हटवाया, जगह-जगह गंदगी थी। कलाकारों ने नाक पर कपड़ा बांध हाथ में झाड़ू उठाई और पूरी ऊबड़-खाबड़ जगह को ठीक किया। यहां घना नीम का पेड़ है, वहीं कुछ कुर्सियां डाल दीं कि थकने पर कोई बैठ कर सुस्ता सके। ज्यादातर तो इन पत्थरों पर ही बैठे नजर आए, शायद कुर्सियां आमजन के लिए थीं।

इन पत्थरों पर चलकर....

सबसे अच्छी और अलग बात यह थी कि सभी उत्सव के मूड में नजर आए और एक-दूसरे की मदद करते रहे। आश्चर्य कि अकेली कांग्रेस पार्षद सोनिला मिमरोट ही वहां दिखाई दीं (क्योंकि भाजपा को तो वैसे भी कला और साहित्य से कोई लगाव नहीं है)। पता चला पार्षद इसी महाविद्यालय से पढ़ी हैं तो उन्हें यहां का दर्द खींच लाया। छायाकार, चित्रकार भोलू मोंढे हाजिर रहे और नाटककार शरद सबल भी, यानी कला की हर विधा के दीवाने यहां पहुंचे।

कलाकारों ने तो बता दिया कि उन्हें महाविद्यालय यहीं चाहिए। इसके लिए ना तो मीडिया के पास गए और ना ही नेताओं या अफसर के। खंडहरों में इन कलाकारों ने रंग और रेखा के जरिए कोंपलें तो उगा दी हैं, देखना होगा सरकार की नींद कब खुलती है! खुलती भी है या नहीं, पता नहीं!

कोई ये न समझें कि हम झुक गए

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

कश्मीर हुआ लाल... 22 अप्रैल 2025 भारत के इतिहास में जुड़ा इक और काला पन्ना जिसने कश्मीर की वादियों को लाल कर दिया।

गुलों पे लहू बिखर गया
सारा मंज़र ठहर गया
वो जो साथ था बांहो में
एक आवाज से जाने किधर गया
ख़ामोश वादियों में ये किसने दस्तक दी
मुल्क मेरा एक बार फिर सिहर गया

बेफ़िक्र हो घूमना वादियों में, इस भरोसे पर कि सारे हालात सामान्य है। भरोसा कि हमें सुरक्षा मिल गई है। क्या दिन था वो 'निःशब्द'।

22 अप्रैल 2025
वो बेहद खूबसूरत मंज़र था
जहां इक प्यार जन्म ले रहा था
चूड़ियों से भरी कलाईयाँ खनखना रही थीं
बच्चे शोर से आसमाँ सिर पे उठाये थे
धरती पर घोड़े रफ़्तार आज़मा रहे थे
कोई पुराने दिनों की खातिर
कोई नई जिंदगी का आग़ाज़ करने
'जन्नत' में उतरा था
यकबयक माहौल धुँआ धुँआ हो गया
जाने कितनों का सपना सो गया
'बेमुख्वतों को लाल रंग प्यारा था
हम सुकून का रंग सफेद चाह रहे थे
विचार हमारे आपस में टकरा रहे थे
वो इंसान होना भूल गये
खुद को समझने लगे खुदा
कुदरत भूल खुद न्याय कर रहे थे
कश्मीर के फुल रंग बदल रहे थे
'आनंद' जब कराह में बदलता है
दिल हमारा फूट फूट कर रोता है
मासूम बच्चों ने जीवन की सुरक्षा खो दी
गोलियों ने खून से मेंहदी धो दी
यहाँ बैठी मैं सोचती हूँ
जिन्हें गोली की आवाज़ें पसंद है
वो मेरे अल्फ़ाज़ क्यों सुनेंगे

जिन्होंने सहा ये जुल्म, वो बहरे हो गये
शर्मिंदा है उनके लिये जो
इस हादसे से गुज़र गये
लफ़्ज़ बोलने, लिखने से अब
इंकार करते है पर याद रखना कश्मीर
हम तुम्हें बहुत प्यार करते है।

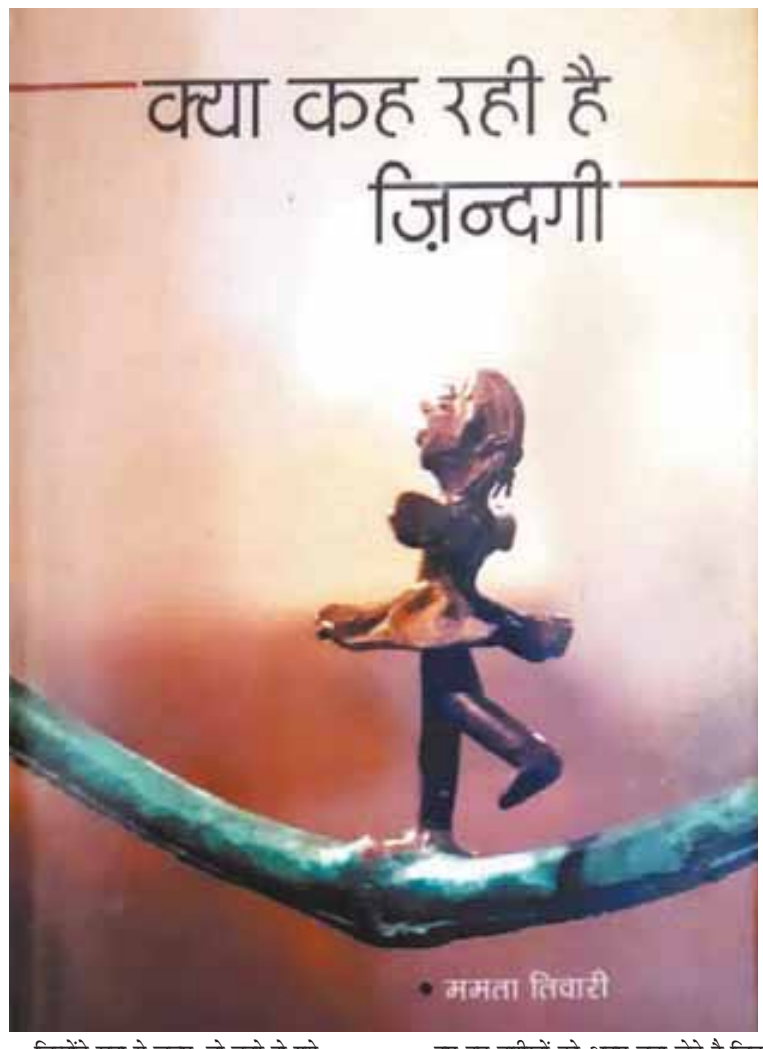

हम उन तारीखों को अहम बना लेते है जिन में हमारे दिल को चोट पहुँचती है। ऐसी ही इक तारीख है जो मुल्क भूल नहीं पा रहा है।

तारीखें कितनी अहम् हो जाती हैं
जब हम हादसों से गुज़रते हैं
ऐ कश्मीर
कुछ ऐसी ही तारीखें
तुम्हें मुसलसल मिली
पर वो तारीखें तुम जमा नहीं कर पाये
जब चलते थे शिकारे झील में
सुकून, उल्लास, त्यौहार होते थे
चप्पू की आवाज़ें
खुशबूदार फूल, बगीचे हुआ करते थे
अचानक सब कुछ लाल हुआ
बेरहमी ने नाज़ुक गुलों को छुआ
खून से रंगे फूलों से
अब महक नहीं आती
याद वो जुर्म की भुलायें नहीं जाती
कान बंद करने की कोशिश में
वो घाटी से आती चीखें दबाई नहीं जाती।

हमें ये ज़िद थी कि हम कश्मीर की खूबसूरती को बरक़रार रखें। खोल दे दरवाजे जन्नत के, कि लोगों को दिखायें, हमें कुदरत ने क्या बख्शा है।

लहू रंग लायेगा
इतनी खूबसूरती, इतना कुदरती वैभव
किसी ने पाया ना होगा
किसी और पे कुदरत ने ये खजाना
लुटाया ना होगा कश्मीर हुआ लाल
गुलों से नहीं
लहू से हौसला रख, जन्नत में बिखरा ये खून
ज़ाया ना होगा।

हम भारतीय सदैव सकारात्मक रहे हैं। हम इस खौफ दरिंदगी में से निकल कर बहुत अच्छा सोच सकते है कि

चलो इक पौधा लगाएं उनकी याद में
कि हमें अब गुलों की ज़रूरत है
डरे हुओं को हौसला बंधाएं
कि कश्मीर बदस्तूर खूबसूरत है
कलम ख़ामोश हुई, शब्द चूक गये
हादसे के बाद हमारे सिर झुक गये
चलो उठो हिम्मत करो उठो
कोई ये ना समझे कि
हम झुक गये।

इसके उपकार याद रखो...

जब हर तरफ जंगल में आग लगी है और पेड़ खाक हो रहे हैं, कटाई से वन खत्म हो रहे हैं, तब वृक्ष के उपकार को याद दिलाना जरूरी जान पड़ता है।

फोटो : बंसीलाल परमार

वैसे देखना, जैसे पोप को पोप देखता है!

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

पोप फ्रांसिस की मौत पर दुनिया भर में गम है। नए पोप आने हैं, शायद यही वजह है कि फिल्म 'कॉन्क्लेव' तीन दिन में पौने तीन सौ फीसद से भी ज्यादा देखी गई। फिल्म में पोप की मौत के बाद नए पोप के चुनाव की जिम्मेदारी कार्डिनल लॉरेंस (राल्फ फाइंस) पर है, लेकिन क्या खुद चर्च की संस्था में रहना चाहते हैं? क्या पोप नहीं बनना चाहते या 'मन भावे मूढ़ हिलावे' वाली बात है? दुनिया भर के कार्डिनल्स के बीच क्या राजनीति होती है और सबसे बड़ी बात क्या कोई भी ऐसा इंसान होगा, जो उम्र पा जाने के बाद भी पाक-साफ बचा हो? अगर गलतियों को मानना ही है तो किसे जाने दिया जाए और किसकी बिना पर सजा हो जाए? ऐसे ढेरों सवालों के साथ एडवर्ड बर्गेर की यह फिल्म पहले ही दिन से चर्चा में है।

बड़े परदे पर पोप और चर्च की कई फिल्में हैं और हर बार यही साबित होता रहा है कि भले ही चर्च की यह जिंदगी ऊंची दीवारों से कम दिखाई देती है, लेकिन आखिर उस तरफ इंसान ही हैं। फिल्म 'टू पोप्स' (2019) ताजा और अहम नाम है। फिल्म पोप बेनेडिक्ट और पोप फ्रांसिस की बातों और मुलाकातों को फिल्म नजदीक से दिखाती है। पोप फ्रांसिस के रोल में जॉनाथन प्राइस रच-बस जाते हैं, वहीं एंथोनी हॉपकिंस (पोप बेनेडिक्ट) हैं। प्राइस के स्क्रीन फ्रांसिस अच्छे शख्स हैं, बिना किसी गुस्से के सोचते थे कि अपनी मां का अपमान करने वाले को मुक्का मारना ठीक है। जब बेनेडिक्ट इस्तीफा देते हैं, तो ये दो शख्स ही हैं जिन्हें दो पोप के रूप में होली-सी को साझा करना पड़ता है। पोप होना कैसा होता है, पोप को वैसे देखना जैसा पोप, पोप को देखता है? मूवी में पोप को दूसरे पोप से कबूलनामा सुनते दिखाया है।

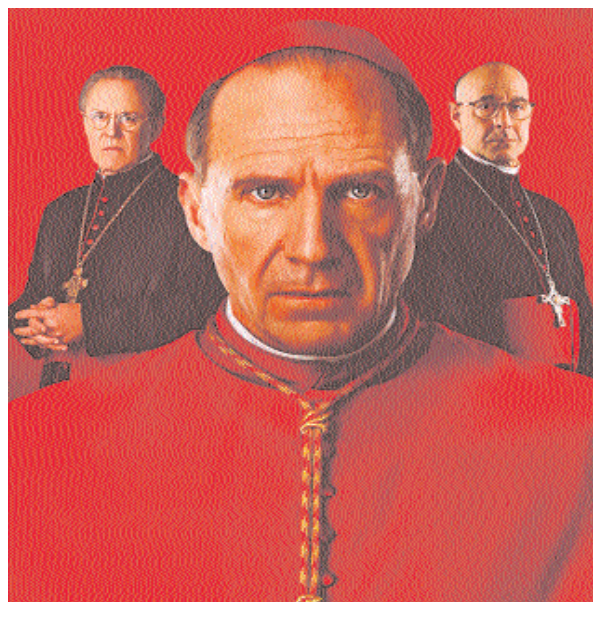

जैसे प्राइस को फिल्म की शुरुआत में चर्च से इस्तीफे की बात करते हुए देखते हैं, वैसे ही कॉन्क्लेव में फाइंस भी इस्तीफे को जेब में लिए घूम रहे हैं। बेचारे जॉन पॉल, जो तरक्की होने के तुरंत बाद मर गए और बाद में नैनी मोरेटी की 'वी हैव ए पोप' फिल्म के लिए प्रेरणा हैं, जिसमें मिशेल पिकोली काल्पनिक कार्डिनल मेलविले की भूमिका निभाते हैं, जो बड़े पद पर आसीन होते हैं और मंच-भय के शिकार हो जाते हैं। फिल्म दिखाती है कि कैसे ज्यादातर कार्डिनल इस भयानक बोझ को झेल नहीं पाते। फिल्म इतिहास का सबसे अपमानजनक, अनिच्छुक पोप रॉबी कोलट्रैन का डेविड है, जो पीटर रिचर्डसन की कॉमेडी 'द पोप मस्ट डाई' (1991) में है, जिसे 'द पोप मस्ट डाइट' शीर्षक दिया है, ताकि अपमान से बचा जा सके। फिल्म बताती है कि नए पोप को कार्डिनल होने की जरूरत नहीं है। कोलट्रैन का एंटीहीरो बदमाश, लेकिन ईमानदार पादरी डेव एल्बिनिजी है, जिसे गलती से होली-सी में पदोन्नत कर दिया जाता है और द गॉडफादर पार्ट-3 में लैम्बर्टो की तरह वेटिकन घूसखोरी और भ्रष्टाचार की जांच करने के लिए भीड़ के दबाव में है।

सिर्फ हास्य और गुस्से के लिए पाओलो सोरेंटिनो के स्ट्रीमिंग टीवी नाटक 'द यंग पोप' में जूड लॉ के निभाए काल्पनिक पोप पहले कार्डिनल लेनी बेलार्डो हैं। हम इस नए पोप को सिगरेट पीते देखते हैं। हालांकि जॉन और बेनेडिक्ट भी सिगरेट धुनकते थे। यह यंग पोप बीच पर स्पीडो पहने हुए भी दिखाई देता है। कई महिला सितारों ने महान और मिथकीय पोप जोन की भूमिका निभाई है, जिन्होंने नौवीं शताब्दी में दो साल तक लिंग को छिपाए रखा था। लिव उलमान 1972 में पोप जोन थीं। जोन ऑफ आर्क का अलग रूप परदे पर देखने को मिला।

आने वाले वक्त में शायद पीटर मॉर्गन जैसा कोई शख्स ग्रेट अगेन जैसी नई फिल्म बना सकता है, जो जोनाथन प्राइस फ्रांसिस का शानदार अभिनय दोहरा सकता है। अंतिम मुलाकात चिकने और नासमझ जेडी वेंस से है। सौम्य बुद्धि वाला बूढ़ा आदमी दिल तोड़ने वाले बचकाने और घमंडी उपराष्ट्रपति से बात करने की कोशिश करता है, उसे अपनी आत्मा खरीदने के तरीकों के बारे में सलाह देता है।